प्रश्न अनशन किये जो बैठे हैं

अनागत मुक्तक संग्रह

डॉ. अजय प्रसून

प्रश्न अनशन किये जो बैठे हैं

(अनागत मुक्तक संग्रह)

डॉ. अजय प्रसून

सावी पब्लिकेशन
डालीगंज, लखनऊ

ISBN	978-81-949505-9-2
कृति	**प्रश्न अनशन किये जो बैठे हैं** **(अनागत मुक्तक संग्रह)**
कृतिकार	**डॉ. अजय प्रसून** अध्यक्ष/संस्थापक, अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान, माँ वैभवलक्ष्मी होम्यो क्लीनिक, 538/II/318, योगीनगर, त्रिवेणी नगर तृतीय, सीतापुर रोड, लखनऊ-226020 मो.: 9305107455
प्रथम संस्करण	2021
© स्वत्वाधिकार	कृतिकार
मूल्य	रु. 175/-
प्रकाशक	**सावी पब्लिकेशन** एल.जी.एफ.-6, बंशीधर काम्पलेक्स, डालीगंज, लखनऊ-226020 (उ.प्र.) मो.: 9335221278
शब्द-संयोजन एवं मुद्रक	सदाशिव तिवारी मो.: 9140533271

"PRASHNA ANSHAN KIYE JO BAITHE HAIN"
(Anagat Muktak Sangrah) *by-* **Dr. Ajay Prasoon**

समर्पण

अपने पूज्य पिता श्री स्व. सरोज कुमार द्विवेदी जी एवं
माता स्व. श्रीमती कांती द्विवेदी जी के कर-कमलों में सादर समर्पित-

तुम्हीं ने भरा मन का रीता कलश है।
तुम्हीं से मिला हमको जीवन सुयश है।
तुम्हीं ने पगों को नई चेतना दी,
तुम्हीं से महकता हुआ हर दिवस है।।

डॉ. अजय प्रसून

अनुक्रम

• भूमिका	*डॉ. संगीता बलवन्त*	5
• पुरोवाक्	*प्रो. (डॉ.) वी.जी. गोस्वामी*	8
• मंगलाशा	*डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल*	17
• अपनी बात	*डॉ. अजय प्रसून*	19
• मुक्तक		21-144

डॉ. संगीता बलवन्त
सदस्य विधान सभा
375, गाजीपुर (भा.ज.पा.)

निवासः ग्राम-महराजगंज
गाजीपुर
सी-502, बहुखण्डी, लखनऊ

भूमिका

जाने-माने हिंदीसेवी और शीर्षस्थ कवि डॉ. अजय प्रसून का मुक्तक संग्रह प्रकाशित होकर पाठकों तक पहुँच रहा है। डॉ. अजय के लिए परिचय के शब्दों को समेटना बहुत कठिन है। उनकी विभिन्न काव्य-कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, साथ ही उनके संपादन में अनेक पत्रिकाओं के अंक भी प्रकाशित हो चुके हैं। कविता की विविध विधाओं में, जैसे हिंदी ग़ज़ल, गीत, दोहा, मुक्तक, टप्पा और मुक्तछंद की अनेक रचनाओं से उनका रचना-संसार समृद्ध है। इन सभी विधाओं में उन्होंने 'अनागत' को उकेरा है।

डॉ. अजय प्रसून जी ने 1970 के दशक में 'अनागत कविता आंदोलन' का सूत्रपात किया था। वह दौर कविता आंदोलनों का दौर ही था। चालीस से ऊपर कविता आंदोलनों को हमने उस दौर में देखा है, लेकिन 'अनागत कविता आंदोलन' उस कालखंड की परिधि को लाँघकर वर्तमान में भी अजस्र-अविरल धारा के रूप में बह रहा है, यह 'अनागत कविता आंदोलन' की अन्यतम विशिष्टता है। इसके पीछे बड़ा कारण सनातन भारतीय जीवन पद्धति और जीवन-दर्शन से साम्य का है। कर्म में अनवरत संलग्न रहने और सकारात्मक भावों के साथ जीवन के संघर्षों को झेलने की बात वे उद्धृत करते हैं। डॉ. अजय अपने एक मुक्तक में इस भाव को समेटते हुए लिखते हैंः

सुखद अनागत लायेंगे हम।
चमत्कार दिखलायेंगे हम।
जो पर्वत ऊँचे दिखते हैं,
चरणों तले दबायेंगे हम।।

यह भाव जीवन में सकारात्मक ऊर्जा को भरने वाला है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन संघर्षों से भरा होता है। इन संघर्षों के बीच कुछ लोग थक-हारकर शिथिल हो जाते हैं। कुछ पथ से भटक जाते हैं। कुछ लोग ही ऐसे होते हैं, जो अनवरत संघर्ष करते हुए सुखद भविष्य को पाते हैं। उनके मन में सुखद भविष्य की कामना दीप्तिमान ज्योति की भाँति प्रज्ज्वलित होती रहती है। यही भाव अनागत कविता का है। भारतीय वाङ्मय में कर्म की प्रधानता को, कर्म की पवित्रता को, और कर्म

के पथ की शुचिता को बहुत महत्व दिया गया है। अनागत कविता में ये तथ्य बहुत गहराई तक उतरे हुए हैं। इसी कारण हम अनागत कविता को अपने निकट पाते हैं। अपने जीवन के साथ चलता हुआ पाते हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात, जिसका उल्लेख करना यहाँ प्रासंगिक होगा, कि अनागत कविता में टूटन, बिखराव, ध्वंस, अनास्था जैसे समकालीन कविता के पक्ष नहीं हैं। वस्तुतः ये सभी नकारात्मकता और अस्थिर-दिशाहीनता के बोधक हैं। हमारी काव्य-परंपरा सदैव स्वस्थ और सार्थक दिशा देने वाली रही है। अनागत कविता इस परंपरा की संवाहक है, इस दृष्टि से भी इसका महत्व देखा जा सकता है।

डॉ. अजय जी के साथ अनेक कवियों-कवयित्रियों ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया है। यह क्रम अनवरत जारी है। अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। डॉ. प्रसून की यह कृति उसी कड़ी में मील का पत्थर सिद्ध होगी। इस कृति में विभिन्न मुक्तकों का संग्रह है। इनमें अनागत के साथ सामयिक संदर्भों की विविधता और सजग कवि की जागरूकता दिखाई देती है। अपने कई मुक्तकों में वे बड़ी कुशलता के साथ समय की सच्चाई को प्रस्तुत करते हैं। देखिए, एक बानगी के रूप में:

मनुजता जूझती दिखती जगत भर के बखेड़ों से।
कभी क्या शान्ति मिल सकती जहाजी जंगी बेड़ों से।
समुंदर में जो उठता ज्वार भाटा लील सब जाता,
वही लौटे तटों पर नाव जो बचती थपेड़ों से।।

एक जागरूक कवि अपने आसपास की घटनाओं के प्रति सदैव सचेत रहता है। यह सजगता डॉ. अजय द्वारा रचित मुक्तकों में दिखती है। कोरोना की भीषण महामारी के बीच जीवन की आशा का संचार करते हुए डॉ. अजय प्रसून अपनी लेखनी से लिखते हैं:

न हमको आह भरनी है न पलकों को भिगोना है।
न घुटने टेकने आगे न इसके वश में होना है।
हजारों लोग इसके चक्रव्यूहों में फँसे देखे,
धरा पर काल का पर्याय बन आया कोरोना है।।

इसी प्रकार वे समाज के नेतृत्वकर्ताओं को सचेत हुए करते हुए लिखते हैं:

जो डोली लुट कहीं जाये उठे उंगली कहारों पर।
नदी तो शांत बहती है रहे हलचल किनारों पर।
महासागर की लहरों पर कहाँ प्रतिबंध लग सकता,
हुकूमत चाहती जनता चले उसके इशारों पर।।

और

फले बारूद जिन शाखों पे शाखें बच नहीं सकतीं।
जो निर्दोषों को जकड़ें वे सलाखें बच नहीं सकतीं।
गुनाहों से भरे हाथों को दस्ताने बचाते क्या,
हो जिनकी आँख में धोखा वो आँखें बच नहीं सकतीं।।

डॉ. अजय प्रसून के मुक्तकों में न केवल सामयिक संदर्भ, वरन् जीवन जीने की सीख भी मिलती है। उनके द्वारा बड़ी ही सहजता के साथ जीवन के मूलमंत्र को अलग-अलग मुक्तकों में समेटा गया है। बानगी के रूप में देखें:

हृदय से की गई सेवा सृजन के द्वार जाती है।
रखो श्रद्धा किसी में दृढ़ तो बन पतवार जाती है।
जो परहित में लगे रहते दुःखों को जीत लेते हैं,
भलाई करते जाओ तुम नहीं बेकार जाती है।

और

दहकती भूमि पर कोमल चरण पड़ते रहे जग में।
अवांछित जिद पे अपनी ही सदा अड़ते रहे जग में।
न घुटने टेक पाये और न सिर झुकने दिया अपना,
हजारों लोग अपनी भूख से लड़ते रहे जग में।।

सहज-सरल भाषा और सधे हुए शब्द-संचयन के साथ यह मुक्तक संग्रह स्वयं में विशिष्ट है। इस संग्रह के लिए डॉ. अजय प्रसून जी के लिए मंगलकामनाएँ। निश्चित रूप से यह कृति पाठकों द्वारा सराही जाएगी और अनागत कविता के ध्येय वाक्य कठिन वर्तमान को जीते-भोगते हुए सुखद भविष्य की कामना को सार्थक करेगी।

मंगलकामनाओं के साथ।

(डॉ. संगीता बलवन्त)

पुरोवाक्

अनागत कविता आन्दोलन के प्रवर्तक, रंगीन ग़ज़लों के शायर, सत्य शिव सुंदर से सजाये गीतों के प्रणेता, आध्यात्मिक चेतना के मर्मस्पर्शी शिल्पी एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. अजय कुमार द्विवेदी 'प्रसून' के अनेक काव्य-संग्रह विद्वत्‌जनों के बीच परिचर्चा के विषय रहे हैं और सराहे गये हैं। युग के आँसू (खण्डकाव्य), गाओ गीत सुनाओ गीत, महानगर के बीच (अनागत ग़ज़ल संग्रह), बाँसुरी की भीतरी तह में (अनागत काव्य-संग्रह), दर्पण शिलालेख हो जाये (अनागत गीत संग्रह), आँसुओं का बयान जारी है (अनागत ग़ज़ल संग्रह), कालजयी हम प्यास लिए (अनागत गीत संग्रह), श्री हनुमान अस्सीसा, श्री शनि अस्सीसा और बाल साहित्य आदि प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ उनकी लेखनी से अवतरित हुई हैं। हिन्दी साहित्य में उनका सुनहरा स्थान है। उनका काव्य सृजन अविराम गतिशील रहता है। फेसबुक पर प्रतिदिन कुछ न कुछ काव्य प्रतिभा का प्रकाश फैलता है, अनागत कविता आन्दोलन के संदर्भ में।

डॉ. प्रसून के व्यक्तित्व के कुछ पहलू मैं आप सबके समक्ष लाने में आनंद का अनुभव करूँगा। एक संस्मरण बहुत याद आ रहा है। मैं लखनऊ विश्वविद्यालय में तब कानून का असिस्टेन्ट प्रोफेसर था। सुबह साढ़े छः बजे प्रतिदिन क्लासेज लेने जाता था। उनके पिताश्री यशःशेष श्री सरोज कुमार द्विवेदी जब तब टहल कर घर वापस आ रहे होते थे। वो मुझे प्यार से भइया कहा करते थे। मैं उन्हें प्रणाम करता तो ठिठक कर मुस्कुराते हुए शुभाशीष देते। मेरा मन आनंद से भर जाता था। वह बहुत सरल, हँसमुख व्यक्तित्व के धनी थे। मुझे लगता है, उनके चरित्र के सभी गुण अजय जी ने आत्मसात कर लिये हैं। यह भी उनकी तरह ही अत्यन्त सरल, सहज, हँसमुख व्यक्तित्व के धनी हैं। अहंकारविहीन लगता है उनका आचरण। सुविख्यात कविवर प्रसून जी अपनी स्वयं एक मिसाल हैं, सहजता की।

डॉ. अजय प्रशिक्षण एवं सेवायोजन निदेशालय से प्रशासनिक अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। जनहित परोपकार उन्हें बहुत भाता है। न जाने कितने युवक सर्विस पाकर उन्हें याद करते होंगे। सेवानिवृत्ति के पश्चात् उन्होंने होमियोपैथी औषधालय खोला और जनहित के अपने शौक को निरंतर जारी रख रहे हैं।

काव्यसृजन में उनकी रुचि बहुत पहले से है। मेरी स्मृति के अनुसार सर्वप्रथम उन्होंने बालसाहित्य का ही सृजन प्रारम्भ किया था। कालान्तर में आध्यात्मिक चेतना सचेत हुई और तब इन्होंने श्री हनुमान अस्सीसा और श्री शनि अस्सीसा का सृजन किया। इन कृतियों में अस्सी चौपाइयाँ रखी गई हैं। उनके पिताश्री ने इन कृतियों

का नामकरण स्वयं किया था। बातचीत के दौरान उन्होंने यह तथ्य बताया था मुझे। सभी ग्रहों की वंदना भी की है। लगता है कि उनके जीवन में आध्यात्मिक चेतना प्रखर रूप में जाग्रत हुई थी जिसका प्रभाव बाद के सृजन संसार पर परिलक्षित होता है।

मेरे मन में एक और बड़ी बात आयी है, जब उन्होंने सरस सरल सत्य शिव सुंदर के भावों से सँजोकर गीत लिखे तो वह बहुत चर्चित हुए क्योंकि वह गीत लय सुर ताल में थे। आकाशवाणी लखनऊ से वह गीत प्रसारित भी हुए।

मेरा मानना है कि प्रत्येक कवि गीत की रचना तो अवश्य करता है लेकिन इतने सुंदर गीत लिखना बहुत कठिन होता है कि उसे आकाशवाणी भी उचित व उपयुक्त समझे और प्रसारित करे। लेकिन बहुत कम कवियों को यह सौभाग्य प्राप्त होता है। इतना ही नहीं, आकाशवाणी लखनऊ ने इन्हें मान्यताप्राप्त गीतकार के रूप में अनुबंधित भी कर लिया। समय-समय पर इनके गीतों का प्रसारण आकाशवाणी लखनऊ से होता रहा। संगीतबद्ध गीतों ने पर्याप्त सराहना बटोरी। फलस्वरूप एचएमवी सारेगामा कंपनी द्वारा इनके गीतों के कैसेट भी प्रसारित हुए। डॉ. प्रसून के गीतों के कैसेट जाने-माने गायक जगजीत सिंह, एस.पी. बालासुब्रह्मण्यम एवं साधना सरगम, उत्तम चटर्जी, नेहा राजपाल तथा विजयशंकर के साथ उपलब्ध कराये गये। यह खूबी सराहनीय है। कवि अजय जी की इस विलक्षण प्रतिभा का प्रकाश खूब फैला। उनकी कीर्ति गीतों के स्वरों में गूँजने लगी। मैं यह उनकी अद्भुत धरोहर मानता हूँ। इन गीतों का साहित्य जगत में खूब समादर हुआ।

मुझे बेहद खुशी है कि कविवर प्रसून जी की काव्यसृजन यात्रा अविराम गतिशील है। मेरे समक्ष उनके रसदार मुक्तक हैं। सभी मुक्तक सुंदर भावों, नव कल्पनाओं का संगम-सा लगते हैं। बिना पढ़े मन नहीं मानता और पढ़िये तो अंत तक पढ़ने की तीव्र उत्सुकता जाग्रत हो जाती है। मैंने अधिकांश पढ़े हैं। सभी अपने आप में पूर्ण भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। विषय वैशिष्ट्य, संदेशवाहक, सामाजिक सरोकारों से जुड़े, विसंगतियों पर कुठाराघात, सामाजिक जीवन में फैले असामाजिक कृत्यों की निंदा और समस्याओं का कुछ न कुछ हल इंगित प्रस्तुत करने का कवि का प्रयास सराहनीय है और हौसला-हिम्मत का भाव जाग्रत करने में सफलता की चमक सहृदय पाठकों का मन मोह लेती है। आइये मुक्तक संग्रह के भावों का, कल्पनाओं का रसास्वादन करें।

कवि ने अनागत काव्य आंदोलन को साकार करने के सफल प्रयास में अनागत ग़ज़लें, अनागत गीत, अनागत काव्य सृजन भी किया है। इसके अतिरिक्त मुक्तक संग्रह में भी अनागत के संदर्भ में अनेक मुक्तक रचे हैं। मेरा मानना है कि जो अनागत है जिसका आगमन हुआ ही नहीं है, अभी अदृश्य है, उसकी तस्वीर

मनचाही बनायी जा सकती है। यह अत्यंत सुनहरी, चमचमाती हो सकती है और अत्यन्त दुखद भी हो सकती है। अनागत सर्वव्यापक हो सकता है, उसका विराट स्वरूप भी हो सकता है, और उसका अतिलघु अणुरूप भी हो सकता है। कण-कण में व्याप्त हो सकता है। अदृश्य को जैसा चाहे रेखांकित कर सकते हैं।

कवि प्रसून जी के मन को पढ़ने का प्रयास किया तो पाया कि अनागत सत्य शिव सुंदर की दिलकश तस्वीर, आकर्षक चित्र है। वह भारतीय दर्शन, भारतीय संस्कृति के मूल्यों में अपनी आस्था रखते हैं, इसलिये आस्था के फूलों की खुशबू में उनका मन रम गया और उन्हीं मूल्यों, सिद्धांतों के अनुरूप ही सोचा समझा है अनागत को, अनागत की विशेषताओं को, गुणों को। एक मुक्तक इस धारणा का साक्षी माना जा सकता है। वह अति सुंदर अभिव्यक्ति लिपिबद्ध करते हैंः

अनागत में हमें परब्रह्म का आभास होता है।
हमारी उँगलियाँ छू लें, निकट आकाश होता है।
न माने कोई भी हमको, मगर विश्वास है इतना,
अनागत मन के मंदिर में हमारे पास होता है।।

कितना सुंदर, कितना अद्‌भुत भाव है। जो विराट है अपने स्वरूप में, उसे वह अत्यन्त लघु रूप में अपने मन-मंदिर में विराजमान पाते हैं। एक और मुक्तक की छटा देखते ही बनती हैः

हमारी भावनाओं में, हमारी कामनाओं में।
अनागत मुस्कुराता है हमारी कल्पनाओं में।
यही तो आज के युग के लिये आधार जैसा है,
अनागत गुनगुनाता है हमारी सर्जनाओं में।।

अनागत से कितना गहरा रिश्ता है उनकी भावनाओं से, कामनाओं से, कल्पनाओं से कि उसकी मुस्कुराहट इस कलयुग में भी आधार के समान है। इसीलिए उनका मानना है कि उनकी सर्जनाओं में, काव्यसृजन में उसके गुनगुनाने की आवाज ही अभिव्यक्त होती है। उनकी अटूट धारणा है कि अनागत के संदर्भ में काव्यसृजन होगा, वह सच्चाई से रूबरू करायेगा और क्षितिज के नए द्वार खोल देगाः

जो बोलेगा कसौटी पर उसे पहले ही तोलेगा।
वो सच को सामने लाएगा, सच्ची बात बोलेगा।
अनागत में घटित होगा जो उसको देख पायेंगे,
अनागत काव्य आंदोलन क्षितिज के द्वार खोलेगा।।

उनके विचार और चिंतन से अनागत काव्यसृजन सत्य के प्रकाश से चमक उठेगा। मुक्तक का यह सुनहरा रूप मन को छू लेता है, देखेंः

नेह पर प्रीति पर लिख दीं, प्रणय पर काम पर लिख दीं।
मखमली धूप पर लिख दीं, रुपहली शाम पर लिख दीं।
लिखीं हमने प्रकृति की मोहिनी अन्तर्कथायें भी,
कई वासंतियाँ रातें तुम्हारे नाम पर लिख दीं।।

अपने प्रिय को कितना अनुराग करता है उनका मन। जीवन में प्रेम के अनुबंध दोनों पक्ष निभाते हैं, प्रणय के गीत भी गुनगुनाते हैं, गाते हैं परन्तु तत्काल वह यह भी अभिव्यक्त करते हैं कि वैदिक सम्बन्ध तो विधाता पहले से ही लिख देता है, व्यक्तियों के प्यार प्रणय सब धरे रह जाते हैं। यदि विधाता उन्हें प्रेम बंधन में बँधने की अनुमति देता है तो आनंद मनाते हैं अन्यथा जीवन भर स्मृतियों के सहारे जीवन काट लेते हैं और यही बेबसी सृजन बनकर बह निकलती है।

राष्ट्रप्रेम से भी उनका मन भरा हुआ है और उनकी भारत को विश्वगुरु के रूप में देखने की चाहत है और उनका विश्वास है कि अनागत उनकी यह इच्छा पूर्ण जरूर कर देगा। जैसा भारत द्वापर में था, वैसा फिर हो जायेगा। यह उनके राष्ट्रप्रेम की अभिलाषा अवश्य रँग लायेगी। भगवान कृष्ण धर्म की रक्षा द्वापर में अनेक प्रकार से करते हैं। महाभारत में पाण्डव भगवान कृष्ण के संकेतों का पालन ही करते रहे थे। वैसा भारत सुख शांति वाला ही प्रसून जी को चाहिए।

समाज में कटुता व अनीति कैसे सक्रिय है, देखेंः

मोती बस द्वेष के पिरोता है। बीज विध्वंस के ही बोता है।
कटु वचन बोलकर अधम मानव, अपना सम्मान स्वयं खोता है।।

सामाजिक सरोकार से भरा-पुरा मुक्तक संदेश देता है कि कटुवचन बोल कर व्यक्ति अपना सम्मान स्वयं खो देता है। 'सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयात, न ब्रूयात सत्यंप्रियं'। सत्य बोलिये, प्रिय बोलिये, अप्रिय सत्य भी न बोलिये। यही सूत्र पहले से है। इसी सूत्र को उनका मुक्तक मुखर करता है। एक मुक्तक में ईश्वर के प्रति उनका आग्रह है, देखेंः

सामने दूर तक हैं अँधेरे। सुख रहे हमसे मुँह सदा फेरे।
हम तेरी आस में भटकते हैं, प्यासी आँखों में स्वप्न हैं तेरे।।

यह हृदय की पुकार अवश्य उनके दयालु कानों तक जायेगी, इसी कामना से यह सृजन रूप ले पाया। ईश्वर के आसरे रहकर कुछ अच्छा ही होता है- 'तुलसी बिरवा बाग में सींचतहू कुम्हिलाय। राम सहारे जो रहैं पर्वत पर हरियाँय।' में यही भाव अभिव्यक्त हुआ है। सत्य शिव सुंदर का सपना इनके जीवन में समाया लगता है, तभी तो यह निम्न मुक्तक रचा गयाः

हार कैसी भी हो जय बने। जिन्दगी की मधुर लय बने।
भोले शंकर कृपा कीजिये, सारा जीवन ही शिवमय बने।।

जीवन के प्रति कवि अपना दृष्टिकोण विलक्षण रूप में प्रस्तुत करता हैः

आसमानी पवन सा जीवन है। रातरानी सपन सा जीवन है।
है समर्पण की सोच बाला ये, आग पानी हवन सा जीवन है।।

जीवन में सुख-दुःख के तूफान आते रहते हैं और जीवन का सपना सँजोये रहता है मानव। समर्पण की सोच से पता चलता है, जीवन में कुछ पाना है तो अपनी कामनाओं का हवन करना ही पड़ता है। यह जीवन की गति है, यही जीवन की रति है और यही जीवन की प्रगति भी है।

कवि आगाह करता है कि मित्रता तो ठीक है लेकिन इतना मत मानिये कि वह आपके पर कतर कर छोड़ दे। दोस्ती में धोखे से बचने की सावधानी का खयाल अवश्य रखना चाहिये। नीतिगत बात कही गयी है, देखेंः

बस इधर से उधर छोड़ दे। करके वो दर-बदर छोड़ दे।
इतना भी मानिये मत उसे, आपके पर कतर छोड़ दे।।

तुमको बरबाद कर देगा वो। मन में अवसाद भर देगा वो।
साजिशें पीठ पीछे करे, सामने किन्तु वर देगा वो।।

सावधान करने के लिए कितने शानदार मुक्तक विरचित किए हैं कविवर प्रसून जी ने। वाह! एक कतार में हैं अनेक मुक्तक इसी सावधानी के संदर्भ में। जब कभी मित्र के जाल में फँस जाता है व्यक्ति तो कुछ इस प्रकार के सृजन से मन बहला लेता है, देखेंः

मन में सपनों के बीज बोये हैं। नैन नयनों में तेरे खोये हैं।
सोच कर तू बिछड़ गया हमसे, एक बच्चे की भाँति रोये हैं।।

मृत्यु का तांडव भी उन्हें दुखी करता है, निम्न मुक्तक बहुत संवेदनशील हैः

सूने हर घर के आँगन करे। पल में जीवित को ये शव करे।
मृत्यु को मानिये त्रासदी, हर कहीं जा के तांडव करे।।

मन में पीड़ा हो या टीस हो। आप उन्निस तो ये बीस हो।
मृत्यु से बच न पाया कोई, चाहे मानव हो या ईश हो।।

ईश्वर भी जब अवतार लेता है तो देह धारण करने के अनेक कष्ट झेलकर मृत्यु को उपलब्ध हो जाता है। यह शाश्वत सत्य है। कोई भी बचा ही नहीं इसके

वार से। अनेक मुक्तक हैं इसी मृत्यु के तांडव को अभिव्यक्त करते हुए। वरिष्ठ कवि प्रसून जी ने संदेश दिया है, बहुत प्यारा है मुक्तक, मन लुभा लेता है, देखें:

मान लेना न एक सपना तुम। नाम उसका सदा ही जपना तुम।
जिन्दगी भाग्य से मिली है जो, उसे रखना बना के अपना तुम।।

जप तप से जीवन लंबा तो हो ही जाता है, दुख अधिक सता नहीं पाते, यदि व्यक्ति में साक्षी होने का भाव जाग्रत हो जाए। कवि की सीख है कि नारी कोई भी हो, बहन, माँ, बेटी, सबको आदर सम्मान दिया जाना चाहिए:

जो भी माँगें इन्हें वही ला दो। इनपे सर्वस्व अपना बरसा दो।
नारी माँ भी बहन भी बेटी भी, इनको सम्मान देवियों सा दो।।

आदर्श अत्यन्त सुंदर कल्याणप्रद तभी मिलेगा, जब नारी को हम देवियों सा सम्मान दे पायेंगे। यह बात उनके हृदय की कोमलता, पवित्रता, निश्छलता, निष्काम प्रेम की रसधार से भरा होने का पता देती है। बालक के निश्छल मन की बात उन्हें अच्छी लगी है, देखें:

मन तो भोला है खूबसूरत है। सच्चे परमात्मा की मूरत है।
बच्चे होते 'प्रसून' जैसे हैं, अपनेपन की इन्हें जरूरत है।।

बच्चों को प्यार से मनुहार से पाले जाने की वकालत करते हैं प्रसून जी। बचपन बचाओ आन्दोलन का लक्ष्य भी यही रहा है। जब कोई जीवन की राह पर मिल जाता है, प्रेम की सुगंध फैला देता है तो मन कमल की तरह खिल उठता है किन्तु यदि उसका मन साफ नहीं होता है तो धोखा देता है जो जीवन की नींव को हिला देता है। मुक्तक देखें:

तुम न जाने कहाँ से कहाँ मिल गए। मिल गए हम कमल की तरह खिल गए।
किन्तु निकले हृदय के मलिन तुम बड़े, दर्द ऐसा दिया, नींव से हिल गये।।

कवि प्रसून जी ने मिलन का एक चित्रण ऐसा भी हृदयस्पर्शी रचा है, देखें:

न मौसम के अधर बोले, न मधुबन के कुसुम बोले।
नयन डूबे सपन में थे, उन्हीं में होके गुम बोले।
ये अवसर था मुखर होते, मगर थी मौन स्वरलहरी,
न तुम बोले न हम बोले, न मन के कल्पद्रुम बोले।।

पहली मुलाकात में शायद कुछ ऐसा ही होता है। आज के युग में प्रेम का ताना-बाना कैसा है, देखें:

ऐसी ऊँची छलाँग लेता है। शीश पर छत्र टाँग लेता है।
प्रेम देकर वो मात्र दो चुटकी, बदले में प्राण माँग लेता है।।

पारम्परिक धारणा प्रेम की समर्पण की भावना है। प्रेमी सब कुछ समर्पित कर देता है, माँगने का व्यतिक्रम होता नहीं। परन्तु प्रसून जी ऐसे प्रेम की भी बात जानते हैं कि यदि कोई चला जाय अनंत की यात्रा पर तो खाली जगह अखरती रहती है, कमी खलती हैः

जिनके होठों पे प्रीति की लाली। जिनके जीवन में नेह की डाली।
जो यहाँ से चले गए उठ कर, भर न पाती कभी जगह खाली।।

प्रत्येक जाग्रत कवि को बेटियों की लाज लूटने के मामले अत्यन्त दुखद लगते हैं, देखेंः

जहाँ अस्मतें बेटियों की लुटेंगी। जहाँ भीड़ें नीलामियों को जुटेंगी।
जहाँ भोले मासूम सपने जलेंगे, वहाँ साँसें माता पिता की घुटेंगी।।

निरीह माँ-बाप ही यातनायें भुगतते हैं इन परिस्थितियों में।

आपके मुक्तक वैशिष्ट्य के लिए भी विद्वत्‌जनों में सराहे गए हैं। कई मुक्तक परोपकार परहित परमार्थ के संदर्भ में भी हैं और उनका मन परमार्थ में डूबे साधुजनों को नमन करता है, यह भी उनके व्यक्तित्व की चमक का पर्याय हैं, देखेंः

नमन उनको रहे जो रात दिन परमार्थ में डूबे।
भाव उनके चरण चूमें जो हैं भावार्थ में डूबे।
जो बाँटें दुख नहीं औरों के, अपना ही भला चाहें,
नर्क में जाय ऐसी ज़िन्दगी जो स्वार्थ में डूबे।।

भारतीय संस्कृति में परहित परोपकार परमार्थ जनहित पर विचार भरे पड़े हैं। कुछ का दर्शन कराया है कवि ने। उनके मन में कुछ परमार्थ के लिए करने का जज़्बा उभर कर आया हैः

अभी तो मन में मानव के लिए परवाह बाकी है।
ये जीवन सिन्धु गहरा है तो लेनी थाह बाकी है।
हमें अंकित न करना नाम अपना कीर्तिवानों में,
किसी का कर सकें कुछ भी भला ये चाह बाकी है।।

जो लोग असभ्य हैं, उन्हें प्रसून जी का मन अच्छा नहीं समझता। एक मुक्तक देखेंः

न जिनमें सभ्यता हो औने-पौने लोग होते हैं।
किसी व्यभिचारी कामी से घिनौने लोग होते हैं।
वही होते असाधारण कि जिनमें भावना होती,
जो क़द में हों बड़े लम्बे वो बौने लोग होते हैं।।

एक सन्देश देते हैं प्रसून जी, मन हरा-भरा करने वाला एक मुक्तक देखेंः

समय न खोयें और न कोरे हाथ मलें।
जाग्रत होकर मन मंदिर के पुष्प फलें।
विश्व गुरु भारत बन जाये इसीलिये,
गीता गायक के पथ पर हम सभी चलें।।

कोरोना महामारी से अछूते नहीं रहे कविवर प्रसून, एक मुक्तक देखेंः

खलबली सी मचा रहा जग में।
हर किसी को नचा रहा जग में।
ये कोरोना का वायरस जो है,
ध्वंस ऐसा रचा रहा जग में।।

इससे बचने की सुधि भी भरी है मन में। विनय के स्वर कितने दिलकश हैं, देखेंः

कर्मयोगी सपूतों की रक्षा।
सारे जिन्दा सबूतों की रक्षा।
खाकी पर है कहर कोरोना का,
प्रभु करे देवदूतों की रक्षा।।

देखिए मन सभी का आहत है।
सोच में पड़ गया अनागत है।
सारे जग पर प्रभाव है इसका,
ये कोरोना नहीं है आफत है।।

हौसला बुलन्द है और दूसरों में भी हो, ऐसे भाव हैं। जप-तप की महानता का अलख जगाया हैः

चाहता जिसको वो विधाता है।
उनका वरदान रोज पाता है।
वो कभी हार ही नहीं सकता,
जय से जन्मों से उसका नाता है।।

विपरीत जो हो कुण्डली न हाथ अपने मल।
सद्कर्म करता जा तभी निकलेगा कोई हल।
जीवन मरण का प्रश्न जब खड़ा हो सामने,
परमात्मा का ध्यान करना होगा सब कुशल।।

ऐसा कोई विषय नहीं जिस पर प्रसून जी की दृष्टि न गयी हो इस रचना में। विषयवस्तु की विविधता और अभिव्यक्ति की विशेषताओं के कारण यह कृति सहृदय पाठकों को संवेदनाओं से भर देगी। प्रस्तुत मुक्तक संग्रह में कल्पनाओं की गगनचुंबी उड़ान के दर्शन होते हैं और भावों की गहराई सागर सी प्रतीत होती है। सरल भाषा में उत्कृष्ट रचना का स्वरूप सुघर बन पड़ा है। सत्य शिव सुंदर भावों का चमकता संगम है यह कृति। मैं इसका हृदय से स्वागत करता हूँ और कविवर प्रसून जी को पूरे मन से बधाइयाँ देता हूँ। मुझे विश्वास है, इस कृति के मुक्तक पढ़ने में मुझे जो आनंद का आस्वाद मिला है, संवेद्य पाठकों को भी वैसा ही आनंद का आस्वाद अवश्य मिलेगा। साहित्य जगत इस कृति को प्यार और समादर देगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रो. (डॉ.) वी.जी. गोस्वामी
डीन/पूर्व विभागाध्यक्ष
विधि विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ-226003

लखनऊ, 1 मार्च 2021
मो.: 9140904009

मंगलाशा

कवि सर्वशक्तिमान होता है और जहाँ सूर्य की किरणें भी नहीं प्रविष्ट हो सकती हैं, अपनी शब्दशक्ति के बल पर कवि वहाँ भी पहुँचने की क्षमता से युक्त होता है। अजय प्रसून ऐसे ही कवि हैं। इनमें काव्य की धारा को मोड़ने का सामर्थ्य है, जिसका प्रमाण प्रसून जी के द्वारा प्रवर्तित 'अनागत कविता आंदोलन' है। 'अनागत कविता आंदोलन' अपने पाँचवे दशक में है और अब एक अजस्र काव्यधारा का रूप ले चुका है।

काव्यकला में निष्णात प्रसून जी के अनेक कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। उनके आंदोलन से अनेक कवि जुड़े हैं और अनेक सहृदयों को उन्होंने कवि बनाया है या कवि बनने की प्रेरणा दी है। अब उन्होंने अपने मुक्तकों के एक संग्रह को प्रकाशित करने का वीणा उठाया है। मुक्तक काव्य की एक सारगर्भित शैली है, जिसमें 'गागर में सागर' भरी होती है। विचारावली के प्रबल उद्वेग के क्षणों में कवि अपने मन-मस्तिष्क में घुमड़ रहे छोटे-छोटे तात्कालिक भावपूर्ण और संवेदनामय संवेगों-आवेगों को (मुक्त या स्वतंत्र रूप में) एक मुक्तक में परिवर्तित कर देता है। विषयवस्तु के स्तर पर प्रत्येक मुक्तक अपने पूर्ववर्ती और परवर्ती मुक्तक से विश्रृंखलित होता है।

डॉ. अजय प्रसून के मुक्तकों को भी 'अनागत कविता' की तर्ज पर 'अनागत मुक्तक' कह सकते हैं। समर्थ कवि ने अपने मुक्तकों में विभिन्न विषयों की भंगिमाएँ अपनाई हैं। विषयगत वैभिन्य ने इन मुक्तकों को गूढ़ता तो प्रदान की ही है, भावप्रवण संवेदना से भी भर दिया है। कहीं-कहीं तो उनके मुक्तक रहस्यमयी लगने लगते हैं। इस संदर्भ में उनका निम्नांकित मुक्तक देखा जा सकता हैः

जिसमें विस्तार है वह फलक दे कभी। एक दूजे के हित की ललक दे कभी।
क्या पता एक दिन ये अनागत हमें, हमको प्राचीनता की झलक दे कभी।।

उपर्युक्त पंक्तियाँ गूढ़ तो हैं ही, इनमें रहस्यमयता के दर्शन भी होते हैं। कविता की भाषा सर्वशक्तिमान होती है, इसलिए उससे अनकहा भी प्रकट होता रहता है। इस संबंध में डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं, ''आज की कविता को जाँचने के लिए, जो अब सचमुच 'प्रास के रजतपाश' से मुक्त हो चुकी है, अलंकारों की उपयोगिता अस्वीकार कर चुकी है और छंदों की पायलें उतार चुकी है, काव्य-भाषा का प्रतिमान ही शेष रह गया है, क्योंकि कविता के संगठन में भाषा प्रयोग की मूल और केन्द्रीय स्थिति है।'' (भाषा और संवेदना, पृष्ठ-43)

प्रसून जी परम धर्म की ओर इंगित करते हुए इसे सर्जन और भविष्य की सुरक्षा से जोड़ते हुए कहते हैंः

हमारा परम धर्म गर्वित रहेगा। सदा ही जगत को समर्पित रहेगा।
अगर सोच अपनी सृजन की रही तो, अनागत सहज ही सुरक्षित रहेगा।।

कुछ पंक्तियाँ सार्वकालिक होती हैं। ऐसी पंक्तियों में कालजयी सत्य निहित होता है। सुख-दुःख भी शाश्वत सत्य हैं, इसीलिये ये जीवनदर्शन के अंग हैं। इनके बिना जीवन संभव नहीं है। यह संकट का ऐसा समय है, जिससे संपूर्ण मानवता ग्रस्त है। प्रसून जी का यह मुक्तक सुख-दुःख के इसी दर्शन का वर्णन करता हैः

अपने को वो सराहता ही है। पीर हो तो कराहता ही है।
ये तो हर आदमी की चाहत है, सुख तो हर कोई चाहता ही है।।

प्रसून जी का मानना है कि मन सदैव ऊर्जस्वित रहना चाहिए और गगन छूने की लालसा से ओत-प्रोत होना चाहिए। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो उनकी सोच 'मन के हारे हार है, मन के जीते जीत', अर्थात् यदि जोश रहेगा, तो मनुष्य प्रगति का कामी बना रहेगा। तभी तो वे कहते हैंः

बात इसमें है अप्रतिम कोई। ये न प्रस्तर-शिला न हिम कोई।
सोच इसकी गगन को छूती है, मन सदा से महामहिम कोई।।

प्रसून जी अपने मुक्तकों में सब कुछ भर देना चाहते हैं, छोड़ना कुछ भी नहीं चाहते। अँधेरों के दरम्यान वे रोशनी का मंजर बचाए रखने की मुहिम चलाए रखना चाहते हैं। मानव और मानवता दोनों पर ही आसन्न संकट को तिरोहित करना है, यह भाव सर्वोच्च वरीयता वाला है। अब इसी मुक्तक को देखिए, लगता है जैसे कि विश्वव्यापी महामारी को दृष्टिगत करके उन्होंने इसे रचा हैः

भूलो मत यह बात तबाही मचनी है। सत्कर्मों की एक पुस्तिका रचनी है।
हमें सुनिश्चित आज यही तो करना है, मानव की पहचान किस तरह बचनी है?

प्रकाश्य मुक्तक संग्रह की ये कुछ झलकियाँ निश्चिततः डॉ. अजय प्रसून की कलम के सामर्थ्य और उनके कथ्य की बानगी प्रस्तुत कर रही हैं। उनके मुक्तकों की विषयवस्तु विविधता लिए हुए है। पाठक की जिज्ञासा बनाए रखने के लिए शेष विषयों को पाठक की स्वयं की रसज्ञता के ऊपर छोड़ देना उचित होगा। प्रसून जी की भाषा सहज, सरल और भावप्रवण है। आशा ही नहीं, वरन् विश्वास है कि संग्रह पाठकों द्वारा पसंद किया जाएगा। शुभकामनाओं सहित,

डॉ. अश्विनी कुमार शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर व अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग एवं शोध केन्द्र
पं.जवाहरलाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बाँदा-210001 (उ०प्र०)

ए-80, आवास-विकास कॉलोनी
बाँदा-210001 (उ०प्र०)
मो.: 09415171833

अपनी बात

मेरा अनागत मुक्तक संग्रह ‘प्रश्न अनशन किये जो बैठे हैं’ की प्रति आपके समक्ष है। यह मुक्तक अनायास ही नहीं लिखे गये हैं। प्रत्येक मुक्तक के लिये अलग मनःस्थिति सृजित हुई है, तभी इनका सृजन संभव हो सका है। मुक्तकों को अनागत नाम देने की भी वजह है कि इनमें से अधिकांश मुक्तक अनागत की ओर संकेत करते हैं और इसी भावना में वे रचे-बसे भी हैं। मैंने सत्तर के दशक में अनागत कविता आंदोलन की शुरुआत की थी, तब से अनवरत ऐसी रचनाओं का सृजन हो रहा है। अनागत कविता के मूल में कठिन वर्तमान जीते हुए स्वर्णिम भविष्य की कल्पना को साकार करना है। अनागत कविता आंदोलन से अब तक अनेकानेक कवि साहित्यकार जुड़ रहे हैं, अनेक सुप्रसिद्ध साहित्यकारों का आशीर्वाद भी अनागत कविता आंदोलन को प्राप्त हुआ है। अनागत कविता आंदोलन के संदर्भ में नियमित काव्य गोष्ठियों का क्रम भी अनवरत चल रहा है जिनमें कई उत्कृष्ट रचनाकारों को ‘अनागत मार्त्तण्ड’ सम्मान से अलंकृत किया जा चुका है। साथ ही महिला रचनाकारों के लिये ‘अनागत चंद्रिका’ सम्मान की शुरुआत भी हो चुकी है।

यह अनागत मुक्तक संग्रह जीवन की अनेक भोगी हुई स्थितियों का साक्षी भी है और उसे व्याख्यायित भी करता है। आज हमारा देश कई प्रकार की विसंगतियों से जूझ रहा है। देश की जनता बेरोजगारी, बाल विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, राजनैतिक विद्वेष, आदि की ज्वालाओं से दग्ध है। उसे वर्तमान में एक ऐसे मार्गदर्शक की तलाश है जो उसे इन सबसे दूर ले जाकर एक ऐसे स्थान पर खड़ा कर सके, जहाँ वह खुलकर चैन की साँस ले सके। ऐसी स्थिति में अनागत ही एकमात्र सहारे के रूप में हमारा मार्गदर्शक बन सकता है। हमें एक ऐसा चिंतन दे सकता है जो हमारी संपूर्ण मनःस्थितियों को शांत कर हमें अपने लक्ष्य की ओर ले जा सकता है। अनागत आदिकाल से ही हमारा मार्गदर्शक रहा है जो हमें विगत कल और आज की कठिन परिस्थितियों से जूझने, हमें आने वाले कल के सुखद वातावरण में ले जाने की क्षमता रखता है। अनागत कविता ही हमारी सुप्त भावनाओं को जाग्रत कर हमें चिंतन का नया आसमान प्रदान कर सकती है।

यह अनागत मुक्तक समय-समय पर फेसबुक के माध्यम से आप सबके

समक्ष पहुँचे हैं और पहुँचते रहेंगे। साथ ही इन मुक्तकों का पाठ गोष्ठियों एवं कवि सम्मेलनों में भी मेरे द्वारा किया जाता रहा है। यह अनागत मुक्तक मेरे मानस मंदिर के पुष्प हैं जो पाठकों के कर-कमलों में समर्पित कर मैं अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रहा हूँ।

हमारे देश की युवा पीढ़ी अगर इस अनागत कविता से जुड़ती है तो उसे अपने भविष्य के अनेकानेक अनुत्तरित प्रश्नों का हल स्वतः ही मिल जायेगा। अतः अनागत कविता आंदोलन के अंतर्गत प्रकाशित मेरे अनागत मुक्तक संग्रह को आप सभी का आशीर्वाद और शुभ कामनायें प्राप्त हुईं तो मैं अपने श्रम को सार्थक समझूँगा और आजीवन आभारी भी रहूँगा।

जय अनागत

आपका

डॉ. अजय प्रसून

अध्यक्ष/संस्थापक, अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान, माँ वैभवलक्ष्मी होम्यो क्लीनिक, 538/द्वितीय/318, योगीनगर, त्रिवेणी नगर तृतीय, सीतापुर रोड, लखनऊ-226020

दिनांक 7.3.2021
मो.: 9305107455

1

भँवर में फँस भी जाता पर नदी को पार करता है।
ये तीरों और तलवारों की पैनी धार करता है।
सरलता को जटिलता में बदलना काम है इसका,
आदमी वार पर ही वार सौ सौ बार करता है।।

2

अनागत के लिये उत्सुक रहा है जाने कब से मन।
मुखर हो कल्पना इसकी सुखद कर देगा हर जीवन।
सपन पूरे सभी हों भारती माँ के यही इच्छा,
अनागत काल को शत शत नमन वंदन है अभिनंदन।।

3

अनागत में हमें परब्रह्म का आभास होता है।
हमारी उँगलियाँ छू लें निकट आकाश होता है।
न माने कोई भी हमको मगर विश्वास है इतना,
अनागत मन के मंदिर में हमारे पास होता है।।

4

हमारी भावनाओं में हमारी कामनाओं में।
अनागत मुस्कुराता है हमारी कल्पनाओं में।
यही तो आज के युग के लिये आधार जैसा है,
अनागत गुनगुनाता है हमारी सर्जनाओं में।।

5

जो बोलेगा कसौटी पर उसे पहले ही तोलेगा।
वो सच को सामने लायेगा सच्ची बात बोलेगा।
अनागत में घटित होगा जो उसको देख पायेंगे,
अनागत काव्य आंदोलन क्षितिज के द्वार खोलेगा।।

6

नेह पर प्रीति पर लिख दीं प्रणय पर काम पर लिख दीं।
मखमली धूप पर लिख दीं रुपहली शाम पर लिख दीं।
लिखीं हमने प्रकृति की मोहिनी अन्तर्कथायें भी,
कई वासंतियाँ रातें तुम्हारे नाम पर लिख दीं।।

7

जीवन के अनुबंध आदमी सदा निभाता है।
प्रणय प्रीति के छंद गुनगुनाता है गाता है।
आप हम सभी केवल माध्यम ही बन सकते हैं,
वैवाहिक सम्बन्ध विधाता स्वयं बनाता है।।

8

किधर जीवन नदी की धार चिंतन से समझियेगा।
जगत में कौन कैसा है स्वयं मन से समझियेगा।
अगर छोटी दिखें सोचें तो उनसे दूर ही रहिये,
बड़ों का काम उनके ही बड़प्पन से समझियेगा।।

9

हरे रामा हरे कृष्णा हरे हर हर महादेवा।
भ्रमण में पग चलें ये हाथ करते खूब जनसेवा।
हमारी आत्मा की भूमि पर सुख शांति बसती है,
बाँटते ज्ञान का अमृत बाँटते कर्म फल मेवा।।

10

कोई पूछे कि भारतवर्ष यह कैसा दिखाई दे।
कहेंगे हम कि हमको विश्वगुरु जैसा दिखाई दे।
अनागत पूर्ण कर देगा हृदय की भावनाओं को,
रहा द्वापर में जैसा था हमें वैसा दिखाई दे।।

11

बात दुख की तो भरपूर है।
हो गई कितनी मजबूर है।
वह विलग पति से क्या हो गई,
माँग से दूर सिन्दूर है।।

12

मोती बस द्वेष के पिरोता है।
बीज विध्वंस के ही बोता है।
कटु वचन बोल कर अधम मानव,
अपना सम्मान स्वयं खोता है।।

13

करके बैठा कोई खता हूँ मैं।
दर्द का पीर का पता हूँ मैं।
तू मेरा हाथ थाम ले आकर,
बस तेरा साथ चाहता हूँ मैं।।

14

सामने दूर तक हैं अंधेरे।
सुख रहे हमसे मुँह सदा फेरे।
हम तेरी आस में भटकते हैं,
प्यासी आँखों में स्वप्न हैं तेरे।।

15

हार कैसी भी हो जय बने।
जिंदगी की मधुर लय बने।
भोले शंकर कृपा कीजिये,
सारा जीवन ही शिवमय बने।।

16

हमारी कामना निष्क्रिय हमारी साधना निष्क्रिय।
सपन साकार करने थे हुई आराधना निष्क्रिय।
चले थे बाँधने जीवन नदी पर सेतु हम लेकिन,
तुम्हारे कारनामों से उसे है बाँधना मुश्किल।।

17

नयन तलवार से तीखे अधर अंगार से दहके।
तुम्हारी खूबसूरत देह यौवन भार से दहके।
तुम्हारे पाँव कोमल पायलों का भार सहते हैं,
तुम्हारे हाथ के कंगन कुसुम कचनार से दहके।।

18

वनों की आग देखी है गजब की बारिशें देखीं।
अनूठा प्रेम देखा है भयानक रंजिशें देखीं।
तुम्हारे ही इशारे पर बढ़े थे दो कदम आगे,
विफल होते हुए दम तोड़ते वे कोशिशें देखीं।।

19

कभी गिरते कभी उठते कदम जो डगमगाते हैं।
जहर पीते हैं खुश होते जमाने को बताते हैं।
कभी वो फूट कर रोते कभी वो खिलखिला हँसते,
उन्हें मालूम कैसे हो वो जीवन को लुटाते हैं।।

20

तुम्हें देखा तुम्हें जाना तुम्हें अपना बनाया है।
तुम्हारे ही लिये मन में जलधि भर प्यार आया है।
ये पर्वत घाटियाँ नदियाँ ये झरने इसलिये व्याकुल,
तुम्हारे नैन में सपने जगें बीड़ा उठाया है।।

21

पूर्व की रंजिशों में डूबे हो।
व्यर्थ की कोशिशों में डूबे हो।
दर्द की बारिशें जो नयनों में,
तुम उन्हीं बारिशों में डूबे हो।।

22

चाह पूरी बना के रखनी है।
कोहनूरी बना के रखनी है।
वे समझते हैं भार यदि हमको,
उनसे दूरी बना के रखनी है।।

23

आसमानी पवन सा जीवन है।
रात रानी सपन सा जीवन है।
है समर्पण की सोच वाला ये,
आग पानी हवन सा जीवन है।।

24

काल की दृष्टि प्रतिकूल थी।
भाग्य पर जम गई धूल थी।
हर घड़ी सोचता बस यही,
तुमसे मिलना बड़ी भूल थी।।

25

दाँव खेले प्रबल कम न थे।
पाल बैठे कोई भ्रम न थे।
तुम भँवर तक हमें ले गये,
तैरना जानते हम न थे।।

26

बस इधर से उधर छोड़ दे।
करके वो दर-बदर छोड़ दे।
इतना भी मानिये मत उसे,
आप के पर कतर छोड़ दे।।

27

तुमको बरबाद कर देगा वो।
मन में अवसाद भर देगा वो।
साजिशें पीठ पीछे करे,
सामने किन्तु वर देगा वो।।

28

सुगबुगाहट जमाने में क्यों।
छटपटाहट दिखाने में क्यों।
उसको समझा है तुमने अगर,
हिचकिचाहट बताने में क्यों।।

29

वो भला भी लगा है तो क्यों।
वो किसी का सगा है तो क्यों।
अपनों को या किसी गैर को,
देता आया दगा है तो क्यों।।

30

हमसे टाले नहीं जो टला।
अंततः आज हमको खला।
तुमसे संपर्क करना गलत,
तुमसे मिलना गलत फैसला।।

31

आज है पर विगत क्यों लगे।
हर कोई उसमें रत क्यों लगे।
मेरे ईश्वर किसी और को,
उससे मिलने की लत क्यों लगे।।

32

भोर हो सांझ या दोपहर।
सृष्टि का रूप होता प्रखर।
बोलने जब लगें घाटियाँ,
मौन हो जाता है तब मुखर।।

33

आया मौसम वो पग भी बहकने लगे।
होंठ अंगार जैसे दहकने लगे।
ताम्रपर्णी हृदय हो गया है मेरा,
आम्रवन की तरह तुम महकने लगे।।

34

आँसुओं का खजाना भूले हैं।
हम कहीं आना जाना भूले हैं।
अब तो सच सच बयान करना है,
करना कोई बहाना भूले हैं।।

35

एक दिवस वह घड़ी देखना आयेगी।
किये सभी दृष्कृत्य सामने लायेगी।
तब यह सारा स्वांग धरा रह जायेगा,
पोल समय की सारी ही खुल जायेगी।।

36

उफनती भावनाओं को कभी भी मृत न करना तुम।
नहीं बस का तुम्हारे है कठिनतम व्रत न करना तुम।
हमारे पास अनुपम संपदा है धैर्य की प्रियवर,
हमें उपकृत किया भगवान ने उपकृत न करना तुम।।

37

आस बस रखिये उसी से जो कि उत्तम पात्र हो।
जो विचारों भावनाओं से विभूषित मात्र हो।
उससे मत रखना कभी भी आस जो अहमी लगे,
वृद्ध होकर भी अभी तक जो निरंकुश छात्र हो।।

38

कितनी उत्कृष्टता है न समझाइये।
हमको बातों से अपनी न बहलाइये।
सागरों की सतह तक गये हम भी हैं,
हमको मोती या माणिक नहीं चाहिये।।

39

है उचित अब यही सत्य-दर्शन करें।
वाग्देवी के चरणों समर्पण करें।
हम शिखर की चढ़े आखिरी सीढ़ियाँ,
हमसे ऊँचाइयों का न वर्णन करें।।

40

बात मन की किसी से कहो फिर न तुम।
अग्नि में चिंतनों की दहो फिर न तुम।
हद से ज्यादा किसी को भी मत मानना,
है ये संभव कहीं के रहो फिर न तुम।।

41

पहले अभिनय विशेष करता है।
फिर वो मन में प्रवेश करता है।
उसके व्यक्तित्व की ये खूबी है,
वो बिना बात क्लेश करता है।।

42

बात वो कायदे की करता है।
हर किये वायदे की करता है।
अपने हित के लिये सतत तत्पर,
स्वयं के फायदे की करता है।।

43

अब न हमको किसी बात की चाह है।
अब न हमको किसी की भी परवाह है।
थक गये हम कठिन राह चलते हुए,
लक्ष्य अपना हुआ जैसे गुमराह है।।

44

लक्ष्य अपना अलग अपनी राहें अलग।
साथ में जो निकलती थीं आहें अलग।
उसने ऐसी जगह ला के छोड़ा हमें,
अब तो चाहें अलग हैं निगाहें अलग।।

45

अपना माना जिसे वो सशंकित रहा।
सबके द्वारा सदा जो प्रशंसित रहा।
उसने हर दाँव खेला गिरा दे हमें,
जिसको पूजा सदा सर्प दंशित रहा।।

46

अपना माना उसे क्यों पराया किया।
साथ बीता समय इतना जाया किया।
हमको छोटा किया वो बड़ा क्या बना,
वो किया उसने मन को जो भाया किया।।

47

आदमी तो नीच कर्म छोड़ता नहीं।
सही दिशा में जीवन मोड़ता नहीं।
संचित करता रहता पाप शाप भी,
शुभ कर्मों से खुद को जोड़ता नहीं।।

48

हमको है ज्ञात हजारों में सुनी जाती है।
फूलों कलियों में बहारों में सुनी जाती है।
बोलते आप हैं चुन चुन के वजह है शायद,
आपकी बात सितारों में सुनी जाती है।।

49

पाँव रखते हो तो आँगन महकने लगता है।
छू जो लेते हो तो तन मन दहकने लगता है।
जब कभी याद करें तुमको तो कसम ले लो,
सोचते सोचते चिंतन बहकने लगता है।।

50

ये अनागत में है विगत में है।
राधा कृष्णा के मन के सत में है।
सृष्टि के साथ साथ जन्मा है,
प्रेम प्रारम्भ से जगत में है।।

51

वक्त सिरमौर खोते हुए।
हर कठिन दौर ढोते हुए।
हमने देखा बहुत लोगों को,
मृत्यु का कौर होते हुए।।

52

यंत्रणा दे रहे बबूलों से।
कर चुके भूलें जो भी भूलों से।
मेरे ईश्वर मुझे बचा लेना,
अग्नि के उड़ रहे बगूलों से।।

53

वक्ष पर कर प्रहार तीरों का।
भेंट में हार देते हीरों का।
लाभ तुम ही उठा रहे शायद,
हाथ की मिट रही लकीरों का।।

54

शख्सियत की वो बात करते हैं।
अहमियत की वो बात करते हैं।
कौड़ियों की न हैसियत जिनकी,
हैसियत की वो बात करते हैं।।

55

मन में सपनों के बीज बोये हैं।
नैन नयनों में तेरे खोये हैं।
सोच कर तू बिछड़ गया हमसे,
एक बच्चे की भाँति रोये हैं।।

56

शूल ही शूल शूलों से क्या माँगते।
बेरहम उन बबूलों से क्या माँगते।
लौट आये चरण मेरे उस लोक से,
फिर भला अस्थि फूलों से क्या माँगते।।

57

सोच सोच कर हृदय बाँसुरी बहुत देर हाँफी।
चंदन वन में सर्पों की है भीड़-भाड़ काफी।
शीतलता है वहाँ बहुत विष सिंधु अनेकों हैं,
वहाँ न जाना नहीं मिलेगी जीने की माफी।।

58

किसी को वार करने का वो कब अवसर भला देगा।
नयन के तेज से वो आततायी को गला देगा।
हमारा धैर्य सोया है किसी मुचुकुंद के जैसा,
वही आतंक रूपी कालयवनों को जला देगा।।

59

किसी के बीच में कितना मधुर संबंध बोलेगा।
किया किससे कहाँ कब पूर्व का अनुबंध बोलेगा।
बने रणछोड़ थे श्रीकृष्ण मानवता रहे जिन्दा,
पलट कर वार करने कटु वचन जरासंध बोलेगा।।

60

सद्भावों पर आज कुटिलता हावी है।
चेतनाओं पर मौन शिथिलता हावी है।
जीवन था आसान सत्य-शिव-सुंदर सा,
उस पर भी तो आज जटिलता हावी है।।

61

उड़ रहा धैर्य बनकर धुआँ।
दे रही तुमको वो बद्‌दुआ।
भाव देते धरा को नहीं,
आसमानों तुम्हें क्या हुआ।।

62

अपने ही आप से रण करे।
भस्म तन पर वो धारण करे।
ज्योति शिव की करे प्रज्वलित,
जो मसानों में विचरण करे।।

63

सूने हर घर के आँगन करे।
बीच खुशियों के क्रंदन करे।
मृत्यु ऐसी है सच्चाई जो,
हर धराशायी जीवन करे।।

64

नाट्य-मंचन ये अभिनव करे।
पल में जीवित को ये शव करे।
मृत्यु को मानिये त्रासदी,
हर कही जा के तांडव करे।।

65

काल के हाथों निश्चित पिटे,
चाहे ढाई हों या छै फिटे।
मृत्यु विधि की रची कृति जिसे,
आदमी पढ़ ले तो मर मिटे।।

66

मिट न पाती दे वो पीर है।
वक्ष को देती जो चीर है।
लेना हलके में इसको नहीं,
मृत्यु तो गूढ़ गंभीर है।।

67

गीत बरबादी के गाती है।
मृत्यु सीकर अधर आती है।
ये अनागत को धारण करे,
रूप वीभत्स दिखलाती है।।

68

चाहे पर्वत हो या वादियाँ।
रूप दिखलाती है शर्तियाँ।
मृत्यु लाती प्रलय सृष्टि में,
दृष्टि में होतीं बरबादियाँ।।

69

मन में पीड़ा हो या टीस हो।
आप उन्निस तो ये बीस हो।
मृत्यु से बच न पाया कोई,
चाहे मानव हो या ईश हो।।

70

मरघटों की है संचालिका।
क्रूर अंकों भरी तालिका।
मृत्यु से कौन जीता यहाँ,
दिग्विजय करती विष बालिका।।

71

जो नहीं मानकों में कसे।
वे ही सर्पों के द्वारा डँसे।
मृत्यु पर शोध करने चले,
वे शिकंजों में इसके फँसे।।

72

मरघटों में गया आदमी।
हो के लौटे नया आदमी।
नाचा नाचा फिरे हर कहीं,
हो गया बेहया आदमी।।

73

पलकें आकर भिगोने लगा।
मन में विष बीज बोने लगा।
वह बनेगा वजह मृत्यु की,
हमको आभास होने लगा।।

74

मिल न पाता कहीं आसरा।
काया अपनी रही नश्वरा।
छोटा मानव बड़ी मृत्यु है,
उसके नयनों हलाहल भरा।।

75

हम सभी के किये पाप की।
मन के भीतर के संताप की।
पहने पायल विनाशों की है,
मृत्यु है छाया अभिशाप की।।

76

जो करे निंदा देखे नहीं।
हो के शर्मिंदा देखे नहीं।
मरने वाला ही देखे इसे,
मृत्यु को जिंदा देखे नहीं।।

77

क्या बतायें तुम्हें कैसी है।
जैसी होती है बस वैसी है।
मरघटों में करे नृत्य जो,
मृत्यु नृत्यांगना ऐसी है।।

78

फिर न खुलकर कभी वो हँसा।
जिसके मन में कुटिल मन बसा।
वह उबरने न पाया कभी,
शब्द के घेरों में जो फँसा।।

79

शेष जो वस्तु खोनी नहीं।
अब से पलकें भिगोनी नहीं।
आँख से आँसू बन जो गिरा,
वापसी उसकी होनी नहीं।।

80

आपके मार्ग से हट गये।
भ्रम के बादल सभी छँट गये।
आपने ऐसा जादू किया,
हमसे भगवान तक कट गये।।

81

हमको भी गुनगुना लो जरा।
पास अपने बुला लो जरा।
लड़खड़ाती चली जा रही,
जिन्दगी को सम्हालो जरा।।

82

मान लेना न एक सपना तुम।
नाम उसका सदा ही जपना तुम।
जिन्दगी भाग्य से मिली है जो,
उसे रखना बना के अपना तुम।।

83

कर्मनाशा हुई हर नदी।
व्यर्थ कबिरा की है चौपदी।
मृत्यु के गीत गाती हुई,
भागती फिर रही ये सदी।।

84

जो भी माँगें इन्हीं वही ला दो।
इनपे सर्वस्व अपना बरसा दो।
नारी माँ भी बहन भी बेटी भी,
इनको सम्मान देवियों सा दो।।

85

दर्जनों आज भगवान हैं।
जिनके अनुयायी इंसान हैं।
इनमें कुछ तो खुले घूमते,
कुछ तो जेलों के मेहमान हैं।।

86

देख पायें नया कुछ नयन।
ऊबने फिर न पायेगा मन।
शोध इंसान जारी रखे,
सामने आयें मोहक सृजन।।

87

सृष्टि की टूट जाये जो लय।
फिर करेगा भला क्या अजय।
आँसुओं की परीक्षा न लो,
अन्यथा होनी तय है प्रलय।।

88

देख एकांत डर जायेगी।
गंगाजल पा के तर जायेगी।
शब्द की शक्ति पर ध्यान दो,
वरना निज शक्ति मर जायेगी।।

89

रात रानी कुसुम बन झरो।
हाथ हाथों में ले दुख हरो।
बन के सावन की बदली कोई,
मेरे आँगन में बरसा करो।।

90

हाथ अपने न कोरें मले।
हर अहंकार पल में गले।
एक दीपक जला ज्ञान का,
आँधी तूफान में जो जले।।

91

पूर्व के चित्र हों सामने।
फिर दिखाओ उन्हें आइने।
ऐसे तो बात बनती नहीं,
पहले वातावरण तो बने।।

92

मुद्‌दतों बाद तुम फिर मिले।
मुद्‌दतों बाद सपने खिले।
जिसका परिणाम है सामने,
प्यार के चल पड़े सिलसिले।।

93

क्या घटेगा ये जाना नहीं।
कुछ भी खोना या पाना नहीं।
वे रहे पालते रंजिशें,
यार को यार माना नहीं।।

94

आँसुओं में नहाई हुई।
आत्मा ज्यों गलाई हुई।
खाक में मिल गई जिन्दगी,
सोने जैसी तपाई हुई।।

95

वो बहुत याद आते रहे।
नींद में भी सताते रहे।
छोड़ करके धरा व्योम को,
जो समय पूर्व जाते रहे।।

96

योग में मन रमाया गलत।
सच को मन में बसाया गलत।
दूसरों से मिले ज्ञान को,
तुमने अपना बताया गलत।।

97

मन तो भोला है खूबसूरत है।
सच्चे परमात्मा की मूरत है।
बच्चे होते 'प्रसून' जैसे हैं,
अपनेपन की इन्हें जरूरत है।।

98

मौन वातावरण हो गया।
देव सम आचरण हो गया।
मृत्यु का भय गया तुम मिले,
शुद्ध अन्तःकरण हो गया।।

99

तुम न जाने क्या समझा गये।
प्राप्त होना था जो पा गये।
दर्द की देहरी लाँघ कर,
अपने गन्तव्य तक आ गये।।

100

कोई कीमत नहीं जान की।
क्या जरूरत है अनुमान की।
मृत्यु हो चाहे जिसकी मगर,
वह धरोहर है श्मशान की।।

101

गलतियों की वजह जान ली।
हमने कर उनकी पहचान ली।
जिनसे था चाहिये सीखना,
उनसे ही युद्ध की ठान ली।।

102

प्रीति गंगा बहाया करें।
गीत मन के सुनाया करें।
भूले बिसरे दिनों की तरह,
आप भी याद आया करें।।

103

पूर्ण होते नहीं काम हैं।
नाम उनके भी गुमनाम हैं।
उनका जीवन मृतक जैसा है,
साथ जिनके नहीं राम हैं।।

104

मौन सच बोलता है गलत।
भेद सब खोलता है गलत।
विष घुला उसकी नस नस में है,
वक़्त विष घोलता है गलत।।

105

हमको जो भी दिखा सत्य है।
हमने जो भी लिखा सत्य है।
वो जो चाणक्य माणिक्य था,
अब न उसकी शिखा सत्य है।।

106

क्या कहें कैसी क्षति हो गई।
मूढ़ मानव की मति हो गई।
मन मलिन सबके दिखने लगे,
मात्र इतनी प्रगति हो गई।।

107

खोजा लेकिन न पाया सिरा।
चापलूसों से ऐसा घिरा।
आत्ममुग्धा हुई विद्वता,
ऐसे विद्वान का सिर फिरा।।

108

कामना सप्तरंगी मिली।
देह मुद्रा त्रिभंगी मिली।
चोर हमसे भला पाते क्या,
आत्मा स्वस्थ चंगी मिली।।

109

बोलते मीठे स्वर आप भी,
खोलते अपने पर आप भी।
कुछ गिरावट विचारों में है,
वरना छूते शिखर आप भी।।

110

आँखों में भर गई है नमी।
कुछ तो है आचरण में कमी।
विष भरे भाले चिंतन में हैं,
कितना भोला दिखे आदमी।।

111

चाह कर कुछ भी कहते नहीं।
नींव मजबूत ढहते नहीं।
बहते धारा के विपरीत हम,
साथ धारा के बहते नहीं।।

112

इतना भोला रूप कि सब कुछ भूले हम।
मन करता है आगे बढ़ कर छू लें हम।
बंधा हुआ जो प्रीति की मोहक डोरी से,
बैठ के ऐसे झूले में संग झूलें हम।।

113

बिना भक्ति के सुनता नहीं विधाता भी।
रोये बिन तो दूध न देती माता भी।
यूँ ही चलता आया चलता जायेगा,
चले न जग में बेमतलब का नाता भी।।

114

तुम न जाने कहाँ से कहाँ मिल गये।
मिल गये हम कमल की तरह खिल गये।
किंतु निकले हृदय के मलिन तुम बड़े,
दर्द ऐसा दिया नींव से हिल गये।।

115

दुख न देना तुम किसी को घाव मत देना।
कागजों वाली किसी को नाव मत देना।
एक सीमा तक किसी को मानना लेकिन,
उससे ज्यादा फिर किसी को भाव मत देना।।

116

नदी तुम न थे रजबहा मान बैठे।
ये सच है तुम्हारा कहा मान बैठे।
कई लोग ऐसे मिले हमसे आकर,
जो भय से तुम्हें अजदहा मान बैठे।।

117

बन्द द्वारों को खोलो नहीं।
विष हवाओं में घोलो नहीं।
पग तुम्हारे उखड़ जायेंगे,
आँधियों ऐसे डोलो नहीं।।

118

कुछ भी करता नहीं है कभी।
मन सँवरता नहीं है कभी।
जो समय की भँवर में फँसा,
फिर उबरता नहीं है कभी।।

119

हमसे टाले नहीं जो टला।
अंततः आज हमको खला।
तुमसे सम्पर्क करना गलत,
तुमसे मिलना गलत फैसला।।

120

प्रीति की ग़ज़लें गुनगुनाती है।
ईद जब जब घरों में आती है।
मैल हर मन का साफ कर देती,
सादगी से जो मुस्कुराती है।।

121

शेर सी कर दहाड़ टूटे हैं।
जो बनाये थे बाड़ टूटे हैं।
तुमको अनुमान भी नहीं होगा,
जिन्दगी पर पहाड़ टूटे हैं।।

122

जिन्दगी में चढ़ाव भी आये।
नित नया हाव भाव भी आये।
इसमें आता उतार भी तो है,
प्रेम आये तो ताव भी आये।।

123

लोक दोनों बिगाड़ लेता है।
होने वाला जो ताड़ लेता है।
आदमी पाप होते देखे तो,
देख कर वस्त्र झाड़ लेता है।।

124

है उखाड़ और पछाड़ जीवन में।
दूब यदि है तो ताड़ जीवन में।
है ये समतल तो है असमतल भी,
मौन के संग दहाड़ जीवन में।।

125

जाने अंजाने प्राण छूटे हैं।
लोग करके प्रयाण टूटे हैं।
जो चढ़ाने किसी धनुष पर थे,
शाप वश वे ही बाण टूटे हैं।।

126

जान सारा ही सच जायेंगे।
ग्रन्थ कोई तो रच जायेंगे।
आँखें हम फेर कर मृत्यु से,
सोचते हैं कि बच जायेंगे।।

127

ये उड़ाती करों के सुए।
साथ ले जाती है बिन छुए।
मृत्यु आती दबे पाँव है,
जाती कोहराम करते हुए।।

128

मौन मरघट के घर में गया।
एक अंजाने डर में गया।
मृत्यु के व्यूह में आदमी,
फँस गया तो भँवर में गया।।

129

वो सदा के लिये सो गया।
सारे जग के लिये खो गया।
जो फँसा मृत्यु के व्यूह में,
वीर अभिमन्यु वो हो गया।।

130

आत्मा से थे परिशुद्ध भी।
जीत कर धर्म के युद्ध भी।
मृत्यु स्वीकार करके गये,
राम भी कृष्ण भी बुद्ध भी।।

131

जाने कितने बड़ों को लिये।
पाप पूरित घड़ों को लिये।
मृत्यु बाँहों में भर कर गई,
कितने ही रावणों को लिये।।

132

भूमिका लगती कल्पांत की।
है न तुक की न अतुकांत की।
मृत्यु आती है दिखती नहीं,
है ये परिणति शरीरांत की।।

133

कोई करती कभी रण नहीं।
ठानती कोई भी प्रण नहीं।
कोई कारण सदा ही रहे,
मृत्यु होती अकारण नहीं।।

134

जाने किस लोक में पाँव धर।
करके श्रृंगार वह बन सँवर।
मृत्यु अंजान छाया बनी,
हावी हो जाती इंसान पर।।

135

जाने किस लोक को वह चला।
करके जीवन से कुछ फासला।
मृत्यु की गोद में आदमी,
जाता होगा कहाँ फिर भला।।

136

हो अहंकार से तरबतर।
घूमता फिरता हो दर-बदर।
थोड़ा भी यश किसी को मिले,
पाँव धरता न वह भूमि पर।।

137

कुछ धरा के प्रदूषण बने।
कुछ तो साहित्य भूषण बने।
सब में ऐसी न थी योग्यता,
बाकी सब धूलि के कण बने।।

138

लव कहीं तो कहीं पे कुश होंगे।
दूर ऐसे न मन कलुष होंगे।
तीर छूटेंगे होंगे आहत भी,
जब कभी हाथ में धनुष होंगे।।

139

आत्मा मन भिगोया न कर।
इस तरह से तो रोया न कर।
जो गया लौटता फिर नहीं,
उसकी यादें सँजोया न कर।।

140

चाहे अभिशाप से हो ग्रसा।
या कि फिर सर्प ने हो डँसा।
मृत्यु चाहे किसी की भी हो,
लोग कहते उसे हादसा।।

141

टूटती साँस सोते हुए।
अपना सर्वस्व खोते हुए।
छोड़ जाता जगत आदमी,
लोग रह जाते रोते हुए।।

142

जैसे मध्यान्ह सूरज ढला।
जैसे आये कोई जलजला।
इसका आना तो तय सच यही,
मृत्यु है एक आफत बला।।

143

परिजनों को करे शोकमय।
और आना सदा इसका तय।
टूट कर व्योम बनकर गिरे,
मृत्यु आती है लेकर प्रलय।।

144

एक दुर्भाग्य ज्यों सिर मढ़ा।
पाठ अनहोनियों का पढ़ा।
काल के हाथ में आदमी,
तीर जैसे धनुष पर चढ़ा।।

145

आँख में भर के जाती नमी।
याद उनको करे आदमी।
मृत्यु का सामना जो करें,
ऐसे वीरों की क्या है कमी।।

146

गूढ़तम राज खोलता भी है।
मीठी हर बात बोलता भी है।
एक बादल बना वो आवारा,
हर कहीं जा के डोलता भी है।।

147

शीश पर छत्र धारना चाहें।
हमको सशरीर तारना चाहें।
जो मरे थे किया जिन्हें जिंदा,
अब वही हमको मारना चाहें।।

148

जिनको भी पहचान दिलाओ।
जिन पर जीवन धन बरसाओ।
वे ही हृदय तोड़ देते हैं,
जिन पर भी अपनत्व लुटाओ।।

149

अब न करने हैं अनुबंध नव।
सामने कामनाओं के शव।
फूलों की क्यारियों में रुधिर,
कैसे मानें बसंतोत्सव।।

150

दुःख के घट सदा ही पिये।
आदमी आदमी के लिये।
दूसरों के लिये सोच के,
खींचता दर्द के हाशिये।।

151

रोते पाये कई बावले।
जब खुशी खोजने हम चले।
चलते चलते बहुत थक गये,
मौन मस्तिष्क में जलजले।।

152

रूप के सिन्धु में तैरते।
खोजते चेतना के पते।
लग रही भेजने हर लहर,
हमको अनुभूति के न्योवते।।

153

अश्रु के घट कई भर गई।
त्रासदी दे गई वह नई।
मृत्यु ने ऐसी माया रची,
जल गये सुख सपन सुरमई।।

154

रच दुखों की गई सतसई।
अश्रु के सिन्धु उमड़े कई।
पुत्र को बाप के हाथ से,
मृत्यु जब छीन के ले गई।।

155

आग का दौर है जल न जायें कहीं।
अब समय और है छल न जायें कहीं।
आपके प्रश्न का हल इसी में छिपा,
वक्त सिरमौर है ढल न जायें कहीं।।

156

एक मीठी सी लय बन पवन में रहे।
हर घड़ी एक आवागमन में रहे।
हमको संतोष भी है असंतोष भी,
आप ही के न मन में न मन में रहे।।

157

बन हवा हम गगन में विचरते रहे।
शाख के पुष्प जैसे निखरते रहे।
आप का रूप नयनों में धारे हुए,
आप का नाम लेकर सँवरते रहे।।

158

नदिया बनकर हर प्यासे की प्यास बुझाना चाहता।
जाने कब से सुलग रहा आकाश दिखाना चाहता।
जिसने कभी न देखा नयनों से बारिश की बूँदों को,
ऐसे नयनों में कोई मधुमास बसाना चाहता।।

159

कभी तू दूर दिखता है, कभी तू पास दिखता है।
कभी तू आम दिखता है, कभी तू खास दिखता है।
कभी मीठी कभी कड़वी, कभी खट्टी तेरी वाणी,
तेरे व्यवहार में हमको विरोधाभास दिखता है।।

160

बिना सोचे ही फेंके कंकड़ी उथले तड़ाग में।
हैं कूदे जा रहे सब लोग सी ए ए की आग में।
न कुछ भी प्राप्त होगा खाली हाथों लौट आना है,
तमाशा चल रहा है आजकल शाहीन बाग में।।

161

किसी का प्यार पाना है तो थोड़ा धैर्य भी रखिये।
अमन के गीत गाना है तो थोड़ा धैर्य भी रखिये।
कभी भी जल्दबाजी में कदम आगे न रखियेगा,
अगर रिश्ते निभाना है तो थोड़ा धैर्य भी रखिये।।

162

रहा कितना भयंकर नाद पर जागे नहीं हैं हम।
चले बस मंदगति से ही रहे आगे नहीं हैं हम।
नहीं देखा पलटकर अपने पीछे लोग हैं कितने,
किसी भी भीड़ के पीछे कभी भागे नहीं हैं हम।।

163

ये सुनता ही नहीं कुछ शब्द इसके कान में फूँको।
भले अपमान के फूँको भले गुणगान में फूँको।
न तो ये साँस लेता है न तो हरकत करे कोई,
हुआ शव आदमी इसको किसी श्मशान में फूँको।।

164

हो कैसी भी परिस्थिति सिर न हम अपना झुकाते हैं।
सभी संबंध हर हालत में हम हँसकर निभाते हैं।
हदें जब टूट जाती हैं न बचता रास्ता कोई,
अलग अपनी बनाकर राह उस पर चलते जाते हैं।।

165

रहा अपना न गुरु कोई न औरों के हैं गुरुवर हम।
न इसका दुख हमें कोई कभी करते न आँखें नम।
न कोई विद्वता हममें न यश की दौड़ में भागे,
मगर प्रभु की कृपा हम पर किसी से भी नहीं हैं कम।।

166

घनी बूँदों भरा बादल कड़कना बन्द कर देगा।
चिता पर अग्नि पुष्पों का भड़कना बन्द कर देगा।
तभी मिल पायेगी तुमको हमारी प्रेम की पाती,
धड़कता दिल अचानक जब धड़कना बन्द कर देगा।।

167

अभावों की सड़क पर पाँव जलते हैं युवाओं के।
पवन के पक्षियों के पंख हैं घायल दिशाओं के।
न कोई चेतना दिखती है माथे पर भृकुटि तिरछी,
लगे पीढ़ी नई दलदल में है गहरे तनावों के।।

168

समय की चेतना मृत है नदी की हर लहर सोती।
अधर की मुस्कुराहट आदमी के मन जहर बोती।
अधमरी प्रीति लगती अधमरी हर नीति लगती है,
धधकता द्वेष का ज्वालामुखी नफरत मुखर होती।

169

चले जो क्रूरता का नृत्य मानव मन को दहलाये।
समय की सेज पर सोया हुआ भगवान भय खाये।
भला परिणाम क्या होगा इसे बस राम ही जानें,
शरम आती नहीं हमको दनुजता को कहाँ आये।।

170

हमेशा के लिये हम अपनी राहें मोड़ देते हैं।
किसी एकांत से जाकर स्वयं को जोड़ देते हैं।
जो भाता है नहीं मन को न उसको दृष्टि भर देखें,
जिसे हम छोड़ देते हैं सदा को छोड़ देते हैं।।

171

समय के जो पखेरू हैं, उन्हें जाने नहीं देना।
विगत के गीत होठों को, कभी गाने नहीं देना।
हमें बस एक परछाईं समझकर भूल जाना तुम,
हमारी याद आये तो, उसे आने नहीं देना।।

172

न कोई पुष्प मधुवन में, न शाखों पर ही महकेगा।
न पंछी भी कोई खुलकर, गगन के मध्य चहकेगा।
जहाँ पर प्रेम शाश्वत प्रेम की सीमाओं को तोड़े,
वहाँ ज्वालामुखी कोई, अमन के बीच दहकेगा।।

173

दिशाओं में क्षितिज वाले, खुले हम द्वार पायेंगे।
न हलचल सिंधु में होगी, न पर्वत डगमगायेंगे।
कोई जब प्रेम से भारी हुआ, मन टूट जायेगा,
न फिर तुम गुनगुनाओगे, न हम फिर गुनगुनायेंगे।।

174

हृदय प्यासे नयन प्यासे अधर प्यासे हैं तन प्यासा।
भ्रमर प्यासे धरा प्यासी है नीला वो गगन प्यासा।
है प्यासी आत्मा इस सृष्टि की हर दृष्टि है प्यासी,
रहा सदियों से है प्यासा मनुज मन का सुमन प्यासा।।

175

न मौसम के अधर बोले, न मधुवन के कुसुम बोले।
नयन डूबे सपन में थे, उन्हीं में हो के गुम बोले।
ये अवसर था मुखर होते, मगर थी मौन स्वर लहरी,
न तुम बोले न हम बोले, न मन के कल्पद्रुम बोले।।

176

जो आहत भावना है, अब विकल होकर न तरसेगी।
किसी दिन देखना अपनी, पुरातन प्रीति सरसेगी।
वो मधुवन की तरह महकेगा, जीवन को मुखर करके,
तुम्हारे रूप की बदली, कभी यदि मन पे बरसेगी।।

177

जहाँ खुलती सिलन कोई, उसे हम ताग देते हैं।
बहुत से लोग अफवाहों को, अक्सर आग देते हैं।
हमारा तो शुरू से ही रहा, सिद्धान्त है ऐसा,
जिसे मन त्याग देता है, उसे हम त्याग देते हैं।।

178

नया उत्साह नव उल्लास, इस धरती पे छाना है।
हमें इंसान की खातिर, नये सपने सजाना है।
अनागत आन्दोलन आज के, युग की जरूरत है,
सुखद कल को बनाना है, राम का राज लाना है।।

179

बिना समय को जिये हुए, सच अनुभव हो सकता नहीं।
हुआ नहीं विधि अनुमोदित, जो संभव हो सकता नहीं।
और भले कुछ भी हो सकता, जीवन में वह बंधु मगर,
जो रिश्तों को करे कलंकित, मानव हो सकता नहीं।।

180

न याचक बन के भटके हम, किसी भी द्वार दानी के।
न शरणागत बने जाकर, किसी राजा के रानी के।
न फैले हाथ अपने हैं, कि कुछ पा जायें दाता से,
न हिस्सा बन सके अब तक, किसी झूठी कहानी के।।

181

उसका इंसान होना भी क्या।
उसकी पहचान होना भी क्या।
जिसकी नीयत नहीं साफ हो,
उसका विद्वान होना भी क्या।।

182

कोई सपना डरा सा जाता है।
मन भुवन भरभरा सा जाता है।
और ज्यादा निखर के आता वो,
हीरा जब भी तराशा जाता है।।

183

रात दिन मुस्कुराना तुम्हें।
आदमी को झुकाना तुम्हें।
सूखती बेल को देख कर,
आ गया गुनगुनाना तुम्हें।।

184

दो घड़ी तो करो सामना।
जाओ देखो जरा आइना।
वो ही बतलायेगा सच तुम्हें,
बाजे थोथा चना क्यों घना।।

185

ऐसी ऊँची छलांग लेता है।
शीश पर छत्र टाँग लेता है।
प्रेम देकर वो मात्र दो चुटकी,
बदले में प्राण माँग लेता है।।

186

आस का दीप जलने लगे।
प्यास उन्मुक्त पलने लगे।
देख लूँ जब तुझे सामने,
साँस रुक रुक के चलने लगे।।

187

आँखों आँखों में बातें हुईं।
इस तरह पूरी रातें हुईं।
हार या जीत की बात क्या,
प्रीति पनपी न घातें हुईं।।

188

दर्द की पाँखुरी हम लिये।
नेह की बाँसुरी हम लिये।
चाँदनी से भरी रात में,
प्रीति की आँजुरी हम लिये।।

189

लाश दनुजत्व की जलानी है।
आस मनुजत्व की जगानी है।
हमको ऐसा प्रयास करना है,
प्यास अपनत्व की बुझानी है।।

190

पीर मानव की हर प्रमुख छीने।
चाहिये था किसी के दुख छीने।
माफ करता न ईश ऐसों को,
जो किसी दूसरे का सुख छीने।।

191

रात रानी की भाँति महके हैं।
पग शराबी की भाँति बहके हैं।
जल न जायें कहीं अधर मेरे,
होंठ अंगार जैसे दहके हैं।।

192

सीधे भू पर उतरती आई है।
रक्त के कुण्ड भरती आई है।
आसुरी वृत्ति ही तो मानव को,
दूर मानव से करती आई है।।

193

जिनके होंठों पे प्रीति की लाली।
जिनके जीवन में नेह की डाली।
जो यहाँ से चले गये उठ कर,
भर न पाती कभी जगह खाली।।

194

बात इंसान की न है रब की।
बात अब की न बात है तब की।
आचरण मत करो कभी ऐसा,
आप पर उँगलियाँ उठें सबकी।।

195

कल्पनातीत दुष्टाचरण।
राक्षसी वृत्ति का कर वरण।
आवरण ओढ़ कर सत्य का,
कर दिया भ्रष्ट वातावरण।।

196

वही पाँव अपने धरा पर पड़ेंगे।
जहाँ जीभ पर लोग ताले जड़ेंगे।
वहीं पर उपस्थिति सुनिश्चित रहेगी,
जहाँ चिंतनों के सुमन नित सड़ेंगे।।

197

न जीते न मरते विसंगति यही है।
गिरी सोच अतिशय मलिन मति यही है।
कहाँ जायें क्यों जायें कैसे करें क्या,
अनिश्चय न निश्चय बड़ी क्षति यही है।।

198

जहाँ अस्मतें बेटियों की लुटेंगी।
जहाँ भीड़ें नीलामियों को जुटेंगी।
जहाँ भोले मासूम सपने जलेंगे,
वहाँ साँसें माता-पिता की घुटेंगी।।

199

कहाँ जा रहे हैं अनिश्चय लिये हम।
समय की विषम विष मिली मय पिये हम।
निराकार साकार को मन बसा कर,
निराधार आधार को जय किये हम।।

200

तुम मिले ही नहीं एक अरसा हुआ।
यादों का एक बादल सा बरसा हुआ।
सृष्टि स्तब्ध है दृष्टि निःशब्द है,
अब कहें कैसे मन कितना तरसा हुआ।।

201

दूर तुमसे हुए मन व्यथित हो गया।
सुख का हर पृष्ठ दुख से रचित हो गया।
संकुचित हो गया मन का विस्तार भी,
ऐसा वातावरण कटु सृजित हो गया।।

202

माँस देखकर गिद्ध बने डोला करते हैं।
उचित नहीं बस अनुचित ही बोला करते हैं।
उन्हें पता ही नहीं कि इसका फल क्या होगा,
संबंधों में जो भी विष घोला करते हैं।।

203

गर्भ से वो किसी के जाया हो।
व्योम से चल धरा पे आया हो।
आदमी है वो आदमी मानो,
चाहे अपना कि फिर पराया हो।।

204

कुछ परेशान है नासमझ है अभी।
दिग्भ्रमित और पथभ्रष्ट भी वह तभी।
अपना विश्वास है एक दिन आदमी,
श्रेष्ठता के शिखर पर चढ़ेगा कभी।।

205

पहना यश-नौलखा हमने भी है बहुत।
कीर्ति का रस चखा हमने भी है बहुत।
हमको उम्मीद से प्रभु ने ज्यादा दिया,
मान सबका रखा हमने भी है बहुत।।

206

सृष्टि का मौन अच्छा लगा।
मन का सागौन अच्छा लगा।
दृष्टि की पूर्णता या कमी,
क्या कहें कौन अच्छा लगा।।

207

चंदनी चंदनी मन डँसा।
वन में चंदन के जीवन फँसा।
आत्मा हो सिसकती विवश,
तन दहकने लगा आग सा।।

208

आ न पाई कभी आँख में है नमी।
है खिसकती रही पग तले से जमी।
उसको संजीवनी तो कभी दे नहीं,
वध करे आदमी का सदा आदमी।।

209

अपना ही नीर पीती रही ये नदी।
खुद को बरबाद करती रही ये सदी।
बस लहू से भरे दृश्य दिखते रहे,
काम हरगिज न आ पाई नेकी बदी।।

210

रहता रोगों से भोगों से वह त्रस्त है।
आदमी तो बड़ा ही जबरदस्त है।
साथ औरों के कुछ भी गलत कितना हो,
कैसी भी हो परिस्थिति रहे मस्त है।।

211

इनको मानस में पाल कर रखिये।
इनको चिंतन में ढाल कर रखिये।
शब्द जा करके धरने पर बैठे,
इनकी गरिमा सँभाल कर रखिये।।

212

कुछ नये सेतु बाँधने होंगे।
लक्ष्य के शृंग लाँघने होंगे।
प्रश्न अनशन किये जो बैठे हैं,
उनके उत्तर तलाशने होंगे।।

213

स्वप्न जलते तो राख में तुम हो।
हों अकेले या लाख में तुम हो।
जागते हैं तो सामने तुम ही,
आँख झपके तो आँख में तुम हो।।

214

लौह को मोड़ते नहीं देखा।
दो सिरे जोड़ते नहीं देखा।
सर्प की भाँति आपको हमने,
केंचुलें छोड़ते नहीं देखा।।

215

रश्मि बोते कभी नहीं देखा।
धैर्य खोते कभी नहीं देखा।
विष की वर्षा हुई सलिल की नहीं,
ऐसा होते कभी नहीं देखा।।

216

उसकी हर पूर्ण साधना होती।
जिसकी परहित की कामना होती।
जो भलाई के काम करता है,
उसकी जग में सराहना होती।।

217

जन्मों की प्यास पूरी होती है।
चाह हर खास पूरी होती है।
धर्म के मार्ग पर चले जो भी,
उसकी हर आस पूरी होती है।।

218

सारा जीवन उजाड़ देता है।
बिना पतवार नाव खेता है।
आदमी जब अनीति पर चलता,
लोक दोनों बिगाड़ लेता है।।

219

पूर्व जन्मों का शाप होता है।
न उतरता वो ताप होता है।
कोई समझे इसे नहीं शायद,
व्यर्थ का हर प्रलाप होता है।।

220

घटने वाला जो भाँप जाते हैं।
जिस गली से भी आप जाते हैं।
नाम आता है जब कोरोना का,
मन सभी के ही काँप जाते हैं।।

221

नभ की विराटता का बढ़ अनुसरण करे जो।
हिमराशि और तपती मरु में चरण धरे जो।
जीवन का पूर्ण वैभव संतोष में निहित है,
बन जाये स्वर्ग स्वामी इसका वरण करे जो।।

222

करना जो किसी से कोई वादा न मुकरना।
पूरी जो हो तैयारी तभी, जल में उतरना।
जीवन में जल्दबाजियाँ करना न तुम 'प्रसून',
करना तुम्हें जो भी हो बहुत सोच के करना।।

223

विध्वंस होगा तय है वो प्रभात आयेगा।
निश्चित है आर्त्तनाद स्वर हठात आयेगा।
जो गुप्त बात है वो सदा गुप्त ही रहे,
होगी जो ये मुखर तो चक्रवात आयेगा।।

224

बढ़ करके आगे ईश चरण थाम लीजिये।
साँसों से अपनी जीभ वाला काम लीजिये।
परमात्मा से आत्मा का जब जुड़ाव हो,
तब ध्यानमग्न हो के प्रभु का नाम लीजिये।।

225

खिड़की-झरोखे-द्वार मन कुरेद खुलेंगे।
सभी धर्म-ग्रंथ व्यक्त करके खेद खुलेंगे।
भीतर की रहे बात जो भीतर उचित यही,
खटकीं जो साँकलें तो कई भेद खुलेंगे।।

226

जो कोई कुछ गलत करता आत्मा खूब रोती है।
वो पीती रक्त के आँसू न सपनों को सँजोती है।
न हो पाता उसे मालूम क्या परिणाम निकलेगा,
अधिकतम हानि होती है हृदय में ग्लानि होती है।।

227

नयन भरकर दुखों के गीत भी गाना नहीं पड़ता।
किसी के द्वार भिक्षुक बन के मंडराना नहीं पड़ता।
जो अपनी बाँधकर सीमा यथोचित कर्म करते हैं,
अनागत काल में उनको तो पछताना नहीं पड़ता।।

228

न जब तक सूर्य निकलेगा कुहासा छँट नहीं सकता।
भले कितना निकालो जल नदी में घट नहीं सकता।
जो पत्थर का हृदय ले करके जन्मे इस जगत में हैं,
किसी भी हाल में उनका कलेजा फट नहीं सकता।।

229

न पल भर आत्मा उनकी कभी भी चैन पाती है।
न कोई चाह जीवन की उन्हें आकर लुभाती है।
वो रक्षा कर नहीं सकते स्वयं की या कि सीमा की,
समर के नाम पर ही जान जिनकी सूख जाती है।।

230

नियंत्रण में कभी अपने नहीं वह होश कर पाता।
प्रदर्शित जिंदगी में वह न खुलकर जोश कर पाता।
न अपने की न अपनों की अपेक्षायें करे पूरी,
तनावों में घिरा मानव न कुछ भी ठोस कर पाता।।

231

नमन उनको रहे जो रात दिन परमार्थ में डूबे।
भाव उनके चरण चूमे जो हैं भावार्थ में डूबे।
जो बाँटे दुख नहीं औरों के अपना ही भला चाहे,
नर्क में जाये ऐसी जिंदगी जो स्वार्थ में डूबे।।

232

अभी तो मन में मानव के लिये परवाह बाकी है।
ये जीवन सिंधु गहरा है तो लेनी थाह बाकी है।
हमें अंकित न करना नाम अपना कीर्तिवानों में,
किसी का कर सकें कुछ भी भला ये चाह बाकी है।।

233

रहा इस भूमि के हर धूलि-कण से प्यार है हमको।
सदा ही स्वर्ग से सुंदर लगे संसार है हमको।
हमें मनुजत्व को अमरत्व की अनुभूति देनी है,
अभी तो चाह को लेना बड़ा आकार बाकी है।।

234

किसी के प्यार में ऐसा नहीं तरसा न हो कोई।
हमारी गर्दनों पर द्वेष का फरसा न हो कोई।
हजारों मेघ धरती की तृषा के हित तरसते हैं,
हुआ ऐसा कभी क्या घन कि जो बरसा नहीं कोई।।

235

मिलीं बूँदें जहर की जो उन्हें भी चाट लोगे क्या?
उगे जो भूमि पर भय की वो दाने बाँट लोगे क्या?
हमारी बन के जो आवाज हमको मार्ग दिखलायें,
वो पूछें प्रश्न यदि तुमसे जुबानें काट लोगे क्या?

236

पा विगत गलतियों की क्षमा सकते थे।
पुण्य की पेटिका कर जमा सकते थे।
कर्म के देवता के चरण छू के हम,
एक जीवन मिला यश कमा सकते थे।।

237

है न आक्रोश या फिर अँधेरा घना।
मौन मस्तिष्क है ताड़ जैसा तना।
लाख कोशिश करो कुछ भी सधता नहीं,
काम केवल बचा सोचना सोचना।।

238

बात मन की न मस्तिष्क माना कभी।
गीत उत्कृष्ट जाकर न गाना कभी।
फूल कलियाँ भ्रमर झुलसे देखे सभी,
हमको मधुमास के घर न जाना कभी।।

239

दृश्य स्वर्णिम न फिर से वो दिखलायेंगी।
लौट कर घाटियों में न सुख पायेंगी।
जिनको सीढ़ी बनाकर शिखर पर चढ़े,
फिर न वे सीढ़ियाँ तुमको अपनायेंगी।।

240

यश की पोथी सभी पढ़ तो पाते नहीं।
यंत्र सत्कर्म का मढ़ तो पाते नहीं।
स्वर्ण कितना भी परिशुद्ध हो आदमी,
श्रेष्ठ व्यक्तित्व निज गढ़ तो पाते नहीं।।

241

महत्वाकांक्षायें अग्नियों में झोंकनी होंगी।
कटारें अब न हिंसा की हृदय में भोंकनी होंगी।
जो लापरवाह हैं जो मतलबी इंसान हैं उनकी,
परिंदों की तरह भरती उड़ानें रोकनी होंगी।।

242

न जिनमें सभ्यता हो औने पौने लोग होते हैं।
किसी व्यभिचारी कामी से घिनौने लोग होते हैं।
वही होते असाधारण कि जिनमें भावना होती,
जो कद में हों भले लम्बे वो बौने लोग होते हैं।।

243

समय न खोयें और न कोरे हाथ मलें।
जाग्रत होकर मन-मन्दिर के पुष्प फलें।
विश्वगुरु भारत बन जाये इसीलिये,
गीता-गायक के पथ पर हम सभी चलें।।

244

अनजानी हर राह बड़ी मुश्किल होगी।
दूर सितारों बीच सजी महफिल होगी।
हमको अपना लक्ष्य प्राप्त बस करना है,
जायेंगे हम उधर जिधर मंजिल होगी।।

245

भूलो मत यह बात तबाही मचनी है।
सद्कर्मों की एक पुस्तिका रचनी है।
हमें सुनिश्चित आज यही करना होगा,
मानव की पहचान किस तरह बचनी है।।

246

सफल न होंगे यह गुंजाइश पूरी है।
नये सिरे से चिंतन बहुत जरूरी है।
अब तक किये हुए अनुबंधों की खातिर,
जीवन को गिरवी रखना मजबूरी है।।

247

जिसमें विस्तार है वह फलक दे कभी।
एक दूजे के हित की ललक दे कभी।
क्या पता एक दिन ये अनागत हमें,
हमको प्राचीनता की झलक दे कभी।।

248

कीचड़ वाली मीन रहे तो क्या होगा?
मानस लिये मलीन रहे तो क्या होगा?
वह जमीन जिस पर पग धरने वाले हो,
कौड़ी के बस तीन रहे तो क्या होगा?

249

यदि कहे मन तुम्हारा अगर ले चलो।
घोर कठिनाइयाँ हों मगर ले चलो।
देख लें हम भी कैसी लगेंगी हमें,
हमको अनुभूतियों की डगर ले चलो।।

250

चली थीं जो पहले हवायें वही हैं।
अधर पर पुरातन ऋचायें वही हैं।
गिरी भूमि पर जो विषैली ये बूँदें,
सरस जल न बरसे घटायें वही हैं।।

251

सच न सागर न सीप मोती है।
सच न आदित्य दीप ज्योती है।
सच प्रतिज्ञा है भीष्म की सच को,
लेखनी शब्दों में पिरोती है।।

252

हमारा परम धर्म गर्वित रहेगा।
सदा ही जगत को समर्पित रहेगा।
अगर सोच अपनी सृजन की रही तो,
अनागत सहज ही सुरक्षित रहेगा।।

253

नीर पावन नदी का बन बहते।
शुभ पुरातन की यश कथा कहते।
हम तो माता के मन का मंदिर हैं,
मंदिरों में तो देवता रहते।।

254

हम न विस्थापितों की श्रेणी में।
हम न अभिशापितों की श्रेणी में।
अपना परिचय सहज सरल परिचय,
हम न विज्ञापितों की श्रेणी में।।

255

मौन मस्तिष्क मन हलाहल में।
स्वप्न भटकें कहीं रसातल में।
ध्यान रखना ये भूल कर कोई,
फेंक देना न कंकड़ी जल में।।

256

हम न ऊँची उड़ान वाले हैं।
हम न ऊँचे मचान वाले हैं।
हम तो युग की ऋचायें लिख देते,
हम न झूठे बयान वाले हैं।।

257

करते हैं जो भी ठानते हैं हम।
हो कोई अपना मानते हैं हम।
उसने कब कब कहाँ कहाँ किसको,
हानि पहुँचाई जानते हैं हम।।

258

गाते हम कीर्तन न सोहर हैं।
हम न इतिहास वाली मोहर हैं।
हम तो युगबोध ही करा देते,
हम न युग की कोई धरोहर हैं।।

259

न आई है अपने किये पर हया कुछ,
न सोचें कभी खोया क्या है गया कुछ।
अभी है समय धैर्य यदि रख सकेंगे,
है संभावना हम करेंगे नया कुछ।।

260

खलबली सी मचा रहा जग में।
हर किसी को नचा रहा जग में।
ये कोरोना का वायरस जो है,
ध्वंस ऐसा रचा रहा जग में।।

261

बन के मोहक सुमन खिला न करो।
पेड़ की शाख बन हिला न करो।
तुम जो मिलते हो चैन खो जाता,
है उचित हमसे तुम मिला न करो।।

262

मार्ग अब हर किसी का बाधित है।
कोई ऐसा न जो विवादित है।
अग्नि धधकी मलीन चिंतन की,
आदमी आदमी प्रभावित है।।

263

जाने किस लोक में रहे डूबे।
छद्म आलोक में रहे डूबे।
दुख सदा को रहा नहीं करते,
आप क्यों शोक में रहे डूबे।।

264

लौट कर तो यहीं आओगे।
और रणछोड़ कहलाओगे।
तुम स्वयं से ही भागे फिरे,
भाग कर भी कहाँ जाओगे।।

265

अपने को वो सराहता ही है।
पीर हो तो कराहता ही है।
ये तो हर आदमी की चाहत है,
सुख तो हर कोई चाहता ही है।।

266

बेटा अपना ही सबको भाता है।
अन्य का धन उसे लुभाता है।
कोई कितना भी श्रेष्ठ हो मानव,
श्रेष्ठतम स्वयं को बताता है।।

267

कौन है जिसको यश की चाह नहीं।
कौन जो खोजे सुख की राह नहीं।
अनवरत पापरत वो है सच है,
किन्तु लेता कभी भी थाह नहीं।।

268

योग साधेगा कोई योगी ही।
काम धारेगा कोई भोगी ही।
रक्त की शुद्धता जरूरी है,
वरना काया तो रोगी ही।।

269

कर्मयोगी सपूतों की रक्षा।
सारे जिंदा सबूतों की रक्षा।
खाकी पर है कहर कोरोना का,
प्रभु करे देवदूतों की रक्षा।।

270

प्रश्न कोई ज्वलंत आ जाता।
जैसे जीवन का अंत आ जाता।
तुम कोरोना की बात जब करते,
रोना हमको तुरंत आ जाता।।

271

नाम इसका न अब सहन होगा।
भार इसका कहाँ वहन होगा।
हम कोरोना दहन करें पहले,
बाद में होलिका दहन होगा।।

272

घर में बैठे हैं जोश था उनमें।
गुम हुए आज होश था उनमें।
है ये उपलब्धि विष कोरोना की,
जिंदगी आज लॉकडाउन में।।

273

वार इसका न जाता है जाया।
है विषम वायरस अलग माया।
जब कोरोना का नाम सुनते हैं,
काँपते होंठ काँपती काया।।

274

आँखों को देख सत्य पढ़ दोगे।
कोई नूतन कहानी गढ़ दोगे।
दोष ही दोष हैं भरे तुम में,
दोष किस पर ये सारे मढ़ दोगे।।

275

सहना ये कोप तो सुनिश्चित है।
दगनी ये तोप तो सुनिश्चित है।
तुम जो उत्तर न दे सके समुचित,
लगना आरोप तो सुनिश्चित है।।

276

तुम जो बोलोगे वो भी बोलेगा।
राज वो गूढ़ सारे खोलेगा।
तुमको आभास भी नहीं होगा,
विष वो अमृत कलश में घोलेगा।।

277

सारे जग में प्रसिद्ध कर देगा।
तीखे बाणों से विद्ध कर देगा।
मौन यदि तुम रहे तो संभव वो,
तुमको अपराधी सिद्ध कर देगा।।

278

बात इसमें है अप्रतिम कोई।
ये न प्रस्तर शिला न हिम कोई।
सोच इसकी गगन को छूती है,
मन सदा से महामहिम कोई।।

279

हिम की चट्टान जैसा गलना है।
तपती हो रेत फिर भी चलना है।
जय सुनिश्चित तुम्हारी है तुमको,
इस कठिन दौर से निकलना है।।

280

धैर्य के रथ धकेल देगा वो।
तोड़ संकोच बोल देगा वो।
तुम धरो हाथ उसके काँधों पर,
पीर सारी उँड़ेल देगा वो।।

281

मन में भर कर तरंग छू लोगे।
इन्द्रधनु सप्त रंग छू लोगे।
भूमि सा धैर्य सोच सागर सी,
तुम सफलता के शृंग छू लोगे।।

282

क्या छिपा मन में सब टटोलेंगे।
देखना सारी रैन बोलेंगे।
होंठ बस थरथराये जायेंगे,
तुम न बोलोगे नैन बोलेंगे।।

283

शाम को सूर्य ढल के जायेगा।
हर कोई हाथ मल के जायेगा।
तुम वहाँ तक न सोच पाओगे,
वो जहाँ तक निकल के जायेगा।।

284

वह जो रघुवर चरण पादुका।
सच्चा सुत अंजनी मातु का।
वह जो पल में जलधि पार हो,
एक झोंका प्रखर वायु का।।

285

देखिये मन सभी का आहत है।
सोच में पड़ गया अनागत है।
सारे जग पर प्रभाव है इसका,
ये कोरोना नहीं है आफत है।।

286

चाहिये स्वप्न कुछ नव सृजन के लिये।
कुछ तो उपयुक्त सोचो चयन के लिये।
सुख का तो लाभ यह मात्र इतना ही है,
जैसे बिस्तर पलंग हो शयन के लिये।।

287

जो चाही दोस्ती हमसे तो मालामाल कर देंगे।
अगर तुम शत्रु बन आये तुम्हें कंगाल कर देंगे।
तुम्हारे नाम पर अब थूकती है यह धरा सारी,
तुम्हारी देह से निश्चित अलग हम खाल कर देंगे।।

288

खुशी जीवन से इनके हो गई काफूर है देखो।
ये खाली पेट इनके ये बड़े मजबूर हैं देखो।
हमें देनी है इनको सांत्वना दुख से भरे हैं जो,
हजारों मील चलकर आ रहे मजदूर हैं देखो।।

289

सभी विघ्नों के शिखरों को सदा कर पार जाती है।
वो अपने बालकों के हित स्वयं को मार जाती है।
पिला कर दूध अमृत सा वो शिशु को पालती रहती,
बहे ममता की गंगा जो माँ गंगा हार जाती है।।

290

ईश का स्मरण या भजन ऐसा कुछ तो करें डर मिटें।
दूरियाँ चाहे जैसी भी हों हानिकारक भले पर मिटें।
हर गलतफहमी को दूर कर आत्माओं को मजबूर कर,
तुम हमारे लिये मर मिटो, हम तुम्हारे लिये मर मिटें।।

291

भटकाती हर किसी को एक मृग-मरीचिका।
काँधों पे लादे हम रहे भीषण विभीषिका।
जब वृत्तासुर समक्ष दिखे देवताओं के,
तब तब शरीर काम आयेगा दधीचि का।।

292

आँखों के आगे दृश्य दिख रहे हों यदि विकट।
मस्तिष्क भी हजार खण्डों में जो जाये बँट।
साँसें अगर चलें नहीं सुचारु रूप से,
तो मान लीजिये कि अंत आपका निकट।।

293

हमें जल्दी नहीं कोई समय जब हो तो उत्तर दो।
हमारी मौन है वाणी जो संभव हो मुखर कर दो।
नयन मूँदे तो दिखते तुम अधर से प्रेम लिखते तुम,
हमारी आँख में सपने जरा महके हुए भर दो।।

294

हमें आभास होता काल यह सबको नचायेगा।
रहे जो ईश के आधीन प्रभु उनको बचायेगा।
जो कामी और क्रोधी हैं जो कपटी और लोभी हैं,
समय जीवन में हाहाकार उनके ही मचायेगा।।

295

एक बीमारी जग पे भारी है।
जिन्दगी त्रासदी से हारी है।
पग न अपने ही घर में रख पाया,
वक़्त ने क्या उछाल मारी है।।

296

प्राप्त होना न आदमी से कुछ।
लाभ होना न रोशनी से कुछ।
प्रभु कृपा से मिला बहुत हमको,
हमने माँगा न जिन्दगी से कुछ।।

297

मर्यादा के सारे अतिक्रमण हुए।
गिरी हुई सोचों के अनुसरण हुए।
पल पल ही और अधिक तीव्रता बढ़ी,
लोभ कहाँ जीवन के संवरण हुए।।

298

चाहता जिसको वो विधाता है।
उनका वरदान रोज पाता है।
वो कभी हार ही नहीं सकता,
जय से जन्मों से उसका नाता है।।

299

कैसे कर पाओगे सामना।
वह दिखा देगा फिर आईना।
तुम समझ ही नहीं पाओगे,
कौन सी धातु का वह बना।।

300

चमके हुए नसीब के तारे नहीं रहे।
फिर भी समय से हम कभी हारे नहीं रहे।
माँ ने कभी पोंछा था बड़े प्यार से तब से,
आँसू हमारी आँख के खारे नहीं रहे।।

301

हमको तुम्हारे प्यार पे विश्वास था बहुत।
तुम साथ थे तो पास में आकाश था बहुत।
तुम साथ नहीं हो तो जिंदगी भी दूर है,
बीता तुम्हारे साथ जो पल खास था बहुत।।

302

सब दान करके हाथ ही मलने का नाम है।
शिशु बन के माँ की गोद में पलने का नाम है।
हर रोज स्वप्न जन्मते मरते हैं नैन में,
जीवन तो तपती रेत में चलने का नाम है।।

303

मन में जलाये बैठे हैं संतोष के दिये।
हमको किसी के हाथ से कुछ भी न चाहिये।
जब चाह कोई आत्मा में जन्म ले 'प्रसून',
गीता का पाठ करके ये जीवन सराहिये।।

304

विपरीत जो हो भाग्य कुण्डली न हाथ मल।
सद्कर्म करता जा तभी निकलेगा कोई हल।
जीवन-मरण का प्रश्न जब खड़ा हो सामने,
परमात्मा का ध्यान करना होगा सब कुशल।।

305

ब्रह्म तो मानस बसा पर मानता कोई नहीं।
सामने करता भ्रमण पहचानता कोई नहीं।
कौन हैं हम आये हैं किस लोक से किस काम से,
तुम न जानो हम न जानें जानता कोई नहीं।।

306

कौन क्या कर रहा भीतर कभी खिड़की से मत झाँकें।
उड़े बेरोजगारी की विषैली धूल मत फाँकें।
जरूरी है कि अपनी अपनी सीमा में रहें सारे,
कभी रिश्तों को पैसों से निवेदन है कि मत आँकें।।

307

किसे मानें नराधम हम किसे मानें नरोत्तम हम।
किसे आदित्य हम समझें किसे समझें घना तम हम।
सभी हैं उच्च से भी उच्चतम है निम्न क्या कोई,
किसे मानें लघुत्तम हम किसे मानें महत्तम हम।।

308

न चलता बस किसी का कुछ हजारों लाखों के आगे।
दिखे बस धूल में लिपटे कुसुम उन शाखों के आगे।
अधर पर भी नयन में भी दिखी बस मौन ही पीड़ा,
घटी घटनायें ऐसी ही हमारी आँखों के आगे।।

309

यहाँ हम तुम वहाँ हम तुम कहाँ हम तुम रहे हम तुम।
तुम्हारे पाँव के बिछुये बजे पायल बजी छुम छुम।
न तुमने ही किया अनुभव न हमने ही किया अनुभव,
तुम्हारे भाल पर दमका हमारे प्यार का कुंकुम।

310

सर पे तूफान लाद कर भागे।
देवी देवों को याद कर भागे।
सच की खातिर न जाने कितने ही,
संकटों से विवाद कर भागे।।

311

सृष्टि मरती नहीं बदलती है।
हो प्रदूषण तो हाथ मलती है।
छत्रछाया में ये त्रिदेवों की,
धार चैतन्यता ये पलती है।।

312

कहते जो भी कहाँ निभाते हैं।
हम सही हैं सदा बताते हैं।
अंजली में पवित्र जल भर कर,
हम शपथ दूसरों की खाते हैं।।

313

गूढ़ चिंतन मनन जरूरी है।
हम करें क्या चयन जरूरी है।
लक्ष्य को प्राप्त करना यदि तुमको,
एक चैतन्य मन जरूरी है।।

314

हमारी मान्यताओं में न उतरा है खरा कोई।
न खाली कोई दिखता है न दिखता है भरा कोई।
ये जो आध्यात्म दर्शन है न सबको प्राप्त हो पाता,
अनश्वर धाम में प्रभु के न काया नश्वरा कोई।।

315

न अब तक जान पाये हैं न कर अनुमान पाये हैं।
न अपनों की न औरों की कृपा का दान पाये हैं।
हमें कितने तपस्वी साधु संतों के मिले दर्शन,
किसी भी रूप में प्रभु को नहीं पहचान पाये हैं।।

316

कभी आना हमारे पास कुछ उपहार हम देंगे।
असीमित जिंदगानी का तनिक सा सार हम देंगे।
जो खोजे से नहीं मिलता अचानक प्राप्त होता है,
तुम्हें आध्यात्मिकता से भरा संसार हम देंगे।।

317

मलिन मन में भरे जल को चलो मिलकर सुखा दें हम।
किसी सद्गुरु के चरणों में अगर सर को झुका दें हम।
हमें वह प्राप्त सब होगा जिसे जो वांछित होगा,
उचित होगा कि जीवन ऋण करें कोशिश चुका दें हम।।

318

तुम्हारे भाग्य को शुभ कर्म से जाग्रत करेंगे ये।
हृदय की कामनायें सत्य में परिणत करेंगे ये।
निकट जो भी रहा हो तुम कभी मत भूलना उसको,
ये जीवन के हैं स्वर्णाक्षर तुम्हें उन्नत करेंगे ये।।

319

हमारी सोच है जैसी उसी अनुसार चलते हम।
कभी चलते तटों पर हम कभी मंझधार चलते हम।
हमारा मन उड़ानें भर रहा है देखती दुनिया,
कभी चलते धरा पर हम कभी नभ पार चलते हम।।

320

सरल जीवन को अपना लें इसी में है समझदारी।
मिलेंगे कामयाबी के बड़े अवसर मनोहारी।
यही दर्शन पुरातन का प्रदर्शन से न कुछ मिलना,
उसूलों के सहारे जी न तू ईमानदारी पी।।

321

सलिल सागर का खारा क्यों कोई बतलायेगा हमको।
चढ़ा सूरज का पारा क्यों कोई बतलायेगा हमको।
सभी के पग बढ़े जाते हैं सीधी राह पर उल्टी,
बहे नदिया की धारा क्यों कोई बतलायेगा हमको।।

322

हिमालय गल रहा है गल रही हिम की नदी देखो।
ये सूरज जल रहा है साथ लेकर त्रासदी देखो।
नया कुछ देख पायेंगे इसी आशा में शायद ये,
अनागत पल रहा है साथ में पलती सदी देखो।।

323

जो ईर्ष्या को गले से ही लगाये घूमते फिरते।
जो नफरत को हृदय में ही जगाये घूमते फिरते।
उन्हें क्या चैन जीवन में कभी भी मिल भी पायेगा,
जो क्रोधाग्नि नयनों में जलाये घूमते फिरते।।

324

तुम्हें हम से हमें तुम से न कोई आस रखनी है।
न होगी तृप्त जल से जो वो जिंदा प्यास रखनी है।
किसी कोहनूर हीरे सी चमकती चाह कोशिश कर,
हमें मुट्ठी में करके बंद अपने पास रखनी है।।

325

न जाने कौन सी वे घाटियाँ हैं जिनमें गुम हो तुम।
हमारी आत्मा के कल्पतरु का शुभ कुसुम हो तुम।
कोई भी आ न पाया और कोई भी निकट अपने,
अगर कोई निकट आ पाया है तो वो हो तुम हो तुम।।

326

तब लगता यह जीवन हारा।
तब लगता खोया जग सारा।
तब मानस विचलित होता है,
टूट गिरे जब कोई सितारा।।

327

बढ़ने लगे कुकृत्य के नाखून देखिये।
मष्तिष्क में जहरीला है जुनून देखिये।
जब आदमी ही आदमी की खोदता जड़ें,
यह खेल अनवरत चले 'प्रसून' देखिये।।

328

नैन में स्वप्न कलिका खिले किस तरह।
तोड़े मन प्रस्तरों के किले किस तरह।
तुम असंतोष की अग्नि में जल रहे,
तुमको संतोष आखिर मिले किस तरह।।

329

साँसें जो रटें राम आँखें श्याम देख ले।
मन चित्र देवताओं के तमाम देख ले।
होता तभी तो आत्मा परमात्मा मिलन,
जीवात्मा अनन्त पुण्य धाम देख ले।।

330

भोर फिर ऐसी जग में न आई पुनः।
होने वाली लगे जग-हँसाई पुनः।
जैसी चोटें विगत में हृदय पर लगीं,
चोट भी उसने ऐसी न खाई पुनः।।

331

द्वेष के शब्द टंकित न करिये कभी।
भावनायें सशंकित न करिये कभी।
प्रेम से उनको अपना बनायें रखें,
अपने रिश्ते कलंकित न करिये कभी।।

332

सोते नहीं जगे रह जाते।
किसके भला सगे रह जाते।
जब अपने ही युद्ध ठानते,
तब हम ठगे ठगे रह जाते।।

333

तब होता है अनुभव ऐसा।
तब मानस लगता शव जैसा।
जब हर सपना मृत दिखता हो,
जीवन लगे असम्भव जैसा।।

334

पूजते सारे इंसान हैं।
देते सच्ची वो पहचान हैं।
बाला जी के चरण पूजिये,
सालासर के वो भगवान हैं।।

335

ये जहाँ हम वहीं तो बसते हैं।
जिनके सूखे नयन तरसते हैं।
इतना ज्यादा है दुःख दुनिया में,
आँसू गिरते नहीं बरसते हैं।।

336

जैसा सोच रहे हम क्या ऐसा होगा।
क्या जैसे पहले था फिर वैसा होगा।
क्या फिर सोने की चिड़िया कहलायेगा,
सोचो अपना भारत कल कैसा होगा।।

337

आती जाती बहार की घड़ियाँ।
सावनी जल फुहार की घड़ियाँ।
भाने के नाम पर हमें भातीं,
बस तेरे इंतजार की घड़ियाँ।।

338

चुप रहो तो भी लोग कहते हैं।
तुम कहो तो भी लोग कहते हैं।
प्यार पाना व बाँटना तुमको,
प्यार को लोभी लोग कहते हैं।।

339

कुछ तो सुख छीन लिये जाते हैं।
कुछ तो सुख बीन लिये जाते हैं।
ये तो परहित करो तो मिलता है,
हम तो सुख-मीन लिये जाते हैं।।

340

आता जिसको देख तरस था।
छोटी हो या बड़ी अवस्था।
किसे कहाँ कब यश मिलना है,
ईश्वर इसकी करे व्यवस्था।।

341

हृदय से की गई सेवा सृजन के द्वार जाती है।
रखो श्रद्धा किसी में दृढ़ तो बन पतवार जाती है।
जो परहित में लगे रहते दुखों को जीत लेते हैं,
भलाई करते जाओ तुम नहीं बेकार जाती है।।

342

जो डोली लुट कहीं जाये उठे उँगली कहारों पर।
नदी तो शांत बहती है रहे हलचल किनारों पर।
महासागर की लहरों पर कहाँ प्रतिबंध लग सकता,
हुकूमत चाहती जनता चले उसके इशारों पर।।

343

दहकती भूमि पर कोमल चरण पड़ते रहे जग में।
अवांछित जिद पे अपनी ही सदा अड़ते रहे जग में।
न घुटने टेक पाये और न सिर झुकने दिया अपना,
हजारों लोग अपनी भूख से लड़ते रहे जग में।।

344

न हमको आह भरनी है न पलकों को भिगोना है।
न घुटने टेकने आगे न इसके वश में होना है।
हजारों लोग इसके चक्रव्यूहों में फँसे देखे,
धरा पर काल का पर्याय बन आया कोराना है।।

345

धरा अंबर सहित सारा दिखे परिवेश अपना है।
हुआ जन-जागरण जो भी वही संदेश अपना है।
हमारा हो भला जिसमें हमें वह कार्य करना है,
दिशा-निर्देश अपना है ये सारा देश अपना है।।

346

बीच रण में न शौर्य से ऊबे।
शत्रु के ध्वस्त कर दे मंसूबे।
वीर वो वंदनीय होता है,
जो कभी भी न शोक में डूबे।।

347

धर्म की मूल से ध्वजा धारे।
लाख हो शत्रु पल में संहारे।
वीर पुरुषों की बात क्या कहिये,
मृत्यु को पग से ठोकरें मारे।।

348

जगत विजय करना यदि सारा तुम सोचो।
कैसा हो व्यक्तित्व तुम्हारा तुम सोचो।
सोचो तुम कैसे प्रभुताई पा सकते,
दे सकते हो किसे सहारा तुम सोचो।।

349

जल्दबाजी में कुछ न करना तुम।
हर कदम फूँक फूँक धरना तुम।
बड़ी फिसलन है कर्म शृंगों पर,
धैर्य के साथ ही उतरना तुम।।

350

ठान बैठे 'प्रसून' क्या व्रत हो।
चिंतनों में मुखर अनागत हो।
जब भी सोचें अतीत में जाकर,
सामने आ खड़ा भविष्यत हो।।

351

एक अवसाद सा मन में भर जायेगी।
जो नहीं करना था वो ही कर जायेगी।
क्या करे क्यों करे या करे ही नहीं,
सोचते सोचते सोच मर जायेगी।।

352

कौन सा पाठ पढ़कर चले आये हो।
कौन सी सीढ़ियाँ चढ़ के इठलाये हो।
भूलना मत कभी हो कहाँ से उठे,
अपने आधार को भूल क्या पाये हो।।

353

मन में जलता अलाव है जानो।
किसका कैसा प्रभाव है जानो।
बीच मँझधार में भँवर भी है,
कैसा जल का बहाव है जानो।।

354

सामने सिन्धु चाह के गहरे।
उन सभी पर बहुत कठिन पहरे।
अब कहाँ चैन की बजे वंशी,
अब कहाँ नैन में सपने ठहरे।।

355

वक़्त के हाव भाव देखे हैं।
कैसे कैसे पड़ाव देखे हैं।
हम तो अभिमन्यु बन लड़े जी भर,
द्रोण-शकुनी के दाँव देखे हैं।।

356

बनती कैसे कहानी नहीं।
बात कोई भी मानी नहीं।
तुम मिले मिल के भी क्या मिले,
बात हमने ये जानी नहीं।।

357

आप ही में बसी जान है।
आज भी मन परेशान है।
आते पल याद बीते हुए,
मन का दर्पण भी हैरान है।।

358

हो के कितना विवश देखते।
कैसे कैसे दिवस देखते।
जिंदगी को बिताना पड़ा,
मौन रह कर के बस देखते।।

359

हम सभी को ये स्वीकार्य है।
जो भी आज्ञा शिरोधार्य है।
जिंदगी गूढ़ दर्शन तुम्हें,
बाँचना इसको अनिवार्य है।।

360

सुन सकते हो सुनो कभी उनके मन की।
राह देखते जो मानस परिवर्तन की।
जिनके नयन निहारें प्रभु के चरणों को,
रहे साधना लीन प्रतीक्षा दर्शन की।।

361

आँसुओं में नहाया हुआ प्यार है।
मन विकल है बड़ा जाने संसार है।
भागता मन तुम्हारी तरफ इस तरह,
जैसे जीवन हुआ पूरा निःसार है।।

362

प्रेम को द्वेष से तुमने डाला जला।
अब हुआ बीच में सदियों का फासला।
मन ही मन तुम जो भय हमसे खाने लगे,
आ गया सोच में कैसे ये जलजला।।

363

जिस तरह तुमको माना न माने कोई।
जिस तरह तुमको जाना न जाने कोई।
मन ही मन जैसे तुम हमसे जलने लगे,
ऐसा भी द्वेष मन में न ठाने कोई।।

364

तीक्ष्ण वातावरण अपने पग रोकिये।
जो गलत कर रहे आगे बढ़ टोकिये।
खत्म सद्भावना हो न जाये कहीं,
पूर्व से ही लगी आग मत झोंकिये।।

365

अपना उत्कृष्ट चिंतन दिया कीजिये।
नीर सद्भाव का ही पिया कीजिये।
आसमानों को छू करके हम आये हैं,
बात हमसे न उनकी किया कीजिये।।

366

जीवन के लिये हो सकी है चाह कम नहीं।
रुक जाये चाहे चेतना प्रवाह गम नहीं।
ईश्वर सदा रहा हमारे साथ में तभी,
करते किसी भी बात की परवाह हम नहीं।।

367

वंशी बजेगी मन की जल तरंग की तरह।
होगा चरित्र भी विराट श्रृंग की तरह।
करिये सुधार आप अपने आप में तभी,
निखरेगी जिंदगी पवित्र गंग की तरह।।

368

तम धारदार हो नहीं तो रोशनी भी क्या।
कठिनाइयाँ जो हों नहीं तो जिंदगी भी क्या।
पर्वत सी विघ्न बाधायें सामने न हों,
तो फिर बताइये हमें ये आदमी भी क्या।।

369

मेरा प्रस्तावित अनागत काव्य आन्दोलन।
कर दे झंकृत हर हृदय को जाये जुड़ जन मन।
यह युवा पीढ़ी न जिसका लक्ष्य कोई तय,
प्राप्त करके मार्ग दर्शन लाये परिवर्तन।।

370

परमात्मा करते हैं सबकी आत्मायें शुद्ध।
उनकी शरण में जायें तभी होंगे मन प्रबुद्ध।
अपने ही आप से अनंत से जो चल रहे,
हम जीत जायेंगे सभी ऐसे अनाम युद्ध।।

371

कर आत्मसात लेगा वो परमात्मा कभी।
हम पर कृपा करेगा वो जगदात्मा कभी।
श्रीराम नाम संपदा का कोष मन भरे,
हम जोड़ लेंगे ब्रह्म से निज आत्मा कभी।।

372

कुछ करके दिखायेगा इसी जिद पे अड़ा है।
उसके गले का हार तो संकल्पों जड़ा है।
चमकेगा उसका भाग्य कोहनूर की तरह,
धारण करे जो धैर्य वो इंसान बड़ा है।।

373

अब न सतयुग न त्रेता या द्वापर।
पी गये एक साँस में सागर।
तुम नहीं ऋषि अगस्त्य हो कोई,
जानते हम या जानता ईश्वर।।

374

हम यहाँ होते या वहाँ होते।
होते बस तेरे ही जहाँ होते।
छोड़ देता न तू जो साथ मेरा,
सोचो होते कहाँ कहाँ होते।।

375

अब न हमको कोई परेशानी।
अब करेगा न कोई मनमानी।
एक मत और एक चिंतन हो,
बात सबको यही तो समझानी।।

376

चाँदनी सोम से मिली होती।
ये धरा व्योम से मिली होती।
कितनी चैतन्यता हमें मिलती,
आत्मा ओम से मिली होती।।

377

संस्कारी जो आचरण होते।
करते खुद से ही आप रण होते।
इस धरा की तो बात ही छोड़ो,
व्योम पर आपके चरण होते।।

378

आने वाला जो भी पल है।
वह भविष्य है भावी कल है।
हम अम्बर छूकर आयेंगे,
अपना तो संकल्प अटल है।।

379

स्वयं प्यासी न हो नदी कोई।
व्योमवासी न हो नदी कोई।
उसके जल को अमृत करे ईश्वर,
कर्मनाशी न हो नदी कोई।।

380

कामना के शमन की सुविधा हो।
हर किसी को नमन की सुविधा हो।
बाँधने सेतु स्वप्न के हमको,
उनके आवागमन की सुविधा हो।।

381

चन्द्रमा चाँदनी बिखेरेगा।
पर समय आदमी को घेरेगा।
रेत पर चित्रकार आगत के,
चित्र बेशक नये उकेरेगा।।

382

भटके हम लोग रास्ता खोजो।
अपने हर लक्ष्य का पता खोजो।
जाने कब कौन शत्रु बन जाये,
किसका किससे है वास्ता खोजो।।

383

वो समय आ रहा बतायें क्या।
दुःख भरा गीत कोई गायें क्या।
अब तो भारी शिखर लगें हलके,
व्योम अब शीश पर उठायें क्या।।

384

आँधियाँ आईं कुटियां उड़ा ले गईं।
आयीं बाढ़ें सभी कुछ बहा ले गईं।
मन के सपने कहीं दुबके से बैठे थे,
उनको संगीन घड़ियाँ कहाँ ले गईं।।

385

इस तरह से तो हिम्मत न हारा करो।
मन में अवसाद अपने न धारा करो।
तुम स्वयं एक आदित्य दहके हुए,
दिनकरों को न ऐसे निहारा करो।।

386

नदियाँ भरी उलीच रहे हैं।
लहर-लहर को खींच रहे हैं।
दृष्टि चुराये हुए हम सभी,
देख के आँखें मींच रहे हैं।।

387

चिंतन को संपुष्ट करेंगे।
प्रभु को कभी न रुष्ट करेंगे।
हम ईश्वर को मन में धारें,
वो हमको संतुष्ट करेंगे।।

388

अभिशापों से मुक्ति कहाँ है।
त्रय तापों से मुक्ति कहाँ है।
मन दुविधा के बीच फँसा है,
संतापों से मुक्ति कहाँ है।।

389

अब तक जल बरसा जो स्वल्प है।
मेघों का गर्जन न अल्प है।
हम जो भी माँगें पा लेंगे,
सावन का संकल्प कल्प है।।

390

जल बरसा मन हुआ मयूरा।
फिर भी जीवन लगे अधूरा।
सावन आया खुशियाँ लाया,
सरस हुआ भूमण्डल पूरा।।

391

बूँदें नहीं बरसते आँसू।
छुयें कपोल लरजते आँसू।
कोई आकर इन्हें पोंछ दे,
चाहें लिये तरसते आँसू।।

392

मन की कलियाँ कभी न खिलनी।
शाख न मनुहारों की हिलनी।
चाहे जितनी कोशिश कर ले,
दुष्कर्मी को शान्ति न मिलनी।।

393

होंठों पर भद्दी गाली है।
मन में आशंका पाली है।
चिंतन में दीमकें लगी हैं,
हर दिमाग खाली खाली है।।

394

रची अकविता गीत न होगी।
मन को सुखद प्रतीत न होगी।
जिस मानस में कपट भरा हो,
निश्चित उसकी जीत न होगी।।

395

गुरु चाहे शुभ सदा शिष्य का।
देव चाहते फल हविष्य का।
जैसे पिता पुत्र हित सोचे,
हम चिंतन करते भविष्य का।।

396

क्षय न कुछ भी अक्षय का होता है।
क्रूरतम पल समय का होता है।
शेष कुछ भी कहीं न रह जाता,
आगमन जब प्रलय का होता है।।

397

हम न हम और तुम न तुम होते।
भूमि पर व्योम के कुसुम होते।
जब भी तेवर समय बदलता है,
अच्छे अच्छों के होश गुम होते।।

398

मार्ग सारे सभी के लिये हैं खुले।
लोग बनते रहे हास्य के चुटकुले।
यह जगत एक व्यापार का केंद्र है,
सारे संबंध इसके तुला में तुले।।

399

लेखनी हाथ में भाव खुशबू लिये।
नाद अनहद है तो व्योम में गूँजिये।
इसमें ब्रह्मांड की शक्तियाँ हैं भरी,
शब्द तो ब्रह्म है शब्द को पूजिये।।

400

सारी दुनिया को आँचल में भर लाई है।
चीखते आह भरते वो स्वर पाई है।
लाखों मौतें हुईं लाखों शव भी जले,
ऐसी बीमारी कोरोना ले आई है।।

401

किसी चीज की भी पड़ी लत नहीं है।
तभी शर्म से शीश भी नत नहीं है।
जो कहते खुलेआम एक बार ही हम,
हमें दोहराने की आदत नहीं है।।

402

कहाँ जाना था और पहुँचे कहाँ हैं।
बड़े कष्ट में हैं रुके हम जहाँ हैं।
था अपना इरादा क्षितिज से भी आगे,
निकलना कठिन अग्नि घेरे यहाँ हैं।।

403

गगन छूने धाये धरा पर गिरे तुम।
असीमित निराशाओं से हो घिरे तुम।
सिरे जो पकड़कर सफर तय किया था,
पकड़ने को आतुर पुनः वे सिरे तुम।।

404

चटका हुआ जो दर्पण उसमें न देखना मुख।
अनुभव था जिसमें होता उसमें भला कहाँ सुख।
अभिशप्त मानसिकता में जी रहे अपाहिज,
देखे समाज में बस हैं घोर दुःख ही दुख।।

405

अपनी जिद पर सदा अड़े निकले।
और चिकने बहुत घड़े निकले।
हम समझदार तुमको समझे थे,
किन्तु तुम नासमझ बड़े निकले।।

406

कैसे कहें कि जीवन भरपूर जी चुका हूँ।
चलता रहा सदा ही पल भर नहीं रुका हूँ।
कुछ तो कमी रही है मेरी सोच में तभी तो,
ऊँचाइयों के सम्मुख हरगिज नहीं झुका हूँ।।

407

कहानी जो भी बाकी है उसे आगे बढ़ाना है।
नई पीढ़ी ग्रहण कर ले वही आक्रोश लाना है।
अधर सूखे नयन रूखे उदर भूखे मिलें जिसमें,
न काँधों पर धनुष धारे कोई भी पात्र आना है।।

408

तुम हिस्से हो बड़ी भीड़ के, पास हमारे इक्के दुक्के।
रहे सुरक्षित अपनों में ही, खाये हमने समय के मुक्के।
हमें एक पग चलना मुश्किल, तुम सवार हो वायु अश्व पर,
सुविधाओं के अनुयायी तुम, चले अनवरत हम रुक रुक्के।।

409

वो हममें तुममें इनमें उनमें कर जो भेद देते हैं।
हँसी हँस बेहयाई की प्रकट कर खेद देते हैं।
हमें हरगिज नहीं स्वीकार जो तोड़े मनुजता को,
उन्हें धिक्कारते रिश्तों में कर जो छेद देते हैं।।

410

छोड़ वृक्ष को जाने कितनी शाखें सरस गईं।
जला न कोई दीप चाह की ताखें तरस गईं।
तरसी साँसें तरसी काया तरस गये सपने,
सोचा तुमको तुम्हें सोच कर आँखें बरस गईं।।

411

टूटे दर्पण को फिर जोड़ना तुम नहीं।
हाथ आया समय छोड़ना तुम नहीं।
सारे अनुबंध चाहे भले तोड़ दो,
डोर विश्वास की तोड़ना तुम नहीं।।

412

जाने कैसा समय सामने आ गया।
दर्द बरसों पुराना हुआ फिर नया।
ऐसा आभास होने लगा हैं हमें,
ईश ने छीन ली हम पे करके दया।।

413

हमको देने सहारा भले आये हो।
बाद मुद्दत के संध्या ढले आये हो।
दृष्टि तुमसे मिली देह जलने लगी,
कौन सी अग्नि पीकर चले आये हो।।

414

जब यहाँ ही नहीं तो वहाँ भी नहीं।
भूमि तो भूमि है आसमाँ भी नहीं।
जब सभी कुछ लुटाया तुम्हारे लिये,
तो हमारे लिये ये जहाँ भी नहीं।।

415

कैसे तुमसे निभायें बोलो तो।
पास फिर कैसे आयें बोलो तो।
अब तो कंधे भी थक गये अपने,
बोझ कैसे उठायें बोलो तो।।

416

किये हुए अनुमान पे आई।
अपनों की पहचान पे आई।
युद्ध चल रहा जाने कैसा,
जाने किसकी जान पे आई।।

417

आतताइयों के समूह में।
जीवन है संकट दुरूह में।
फिर अभिमन्यु हमें बनना है,
फँसे हुए फिर चक्रव्यूह में।।

418

जल रही भूमि है जल रहा है गगन।
जल रहे नैन हैं जल रहे हैं सपन।
जल रही भावनायें हैं जलते हृदय,
लोग अक्षत लिये कर रहे आचमन।।

419

नशा नीति है नीति पालन जरूरी।
नशा प्रीति है प्रीति पालन जरूरी।
जमाने से पीता रहा है जमाना,
नशा रीति है रीति पालन जरूरी।।

420

नशे की लगी लत नहीं छूटती है।
घड़ा पाप का बन कभी फूटती है।
नशेबाजी मजबूरी क्या आदमी की,
जो अपने ही परिवार को लूटती है।।

421

दिलवाते हैं न्याय परिश्रम करते हैं।
जो अक्षम उसको ये सक्षम करते हैं।
कुछ तो शासन करे वकीलों के लिये,
परहित करते नमन इन्हें हम करते हैं।।

422

लॉकडाउन में हालत इनकी खस्ता है।
लगता है केवल अधिवक्ता सस्ता है।
इनको भी आवश्यकता धन की होती,
जेबें खाली खाली इनका बस्ता है।।

423

नशा करके आखिर मिला है भला क्या?
इसे पी के इंसान पग भर चला क्या?
कदम डगमगाते अधर लड़खड़ाते,
समझ से परे है ये दारू बला क्या?

424

हँसी हँसी में कितने सारे दुख सहकर।
हर मौसम को सहे नमन उनको कहकर।
चौबीस चौबीस घंटे ड्यूटी करती है,
पुलिस हमारी रक्षा में तत्पर रहकर।।

425

निर्विकार मन सहमे सहमे थकें डरें।
विद्यालय के पथ पर कोमल चरण धरें।
वजन से दुगुने बस्ते लादे फिरते हैं,
बच्चे आखिरकार करें तो क्या करें।।

426

अपनी सुनो शांत मन बैठो।
जीवन है प्रशांत मत बैठो।
तुम्हीं अनागत के रक्षक हो,
मन करके अशांत मत बैठो।।

427

लम्बी एक उड़ान भरेंगे।
विजयश्री का वरण करेंगे।
हम सब भारतवासी मिलकर,
महाशक्ति के पर कतरेंगे।।

428

जितना भ्रमण चरण कर पाते।
उतना लक्ष्य वरण कर पाते।
अम्बर जितनी ऊँचाई को,
कम ही लोग ग्रहण कर पाते।।

429

भूली हुई कहानी जैसा।
मूर्ख विवश अज्ञानी जैसा।
कितना पानीदार जमाना,
शर्म से पानी पानी जैसा।।

430

आतुर मन मचलेगा कैसे।
कल का सूर्य ढलेगा कैसे।
तुमको तो आभास न होगा,
नियति चक्र बदलेगा कैसे।।

431

किसी एकांत की मरुभूमि में वह छोड़ देता है।
किसी अवसाद से जाकर हमें वह जोड़ देता है।
करे क्या आदमी जब साथ पौरुष भी न दे उसका,
बुढ़ापा हम सभी की जिंदगी को तोड़ देता है।।

432

दीन हीन के लिये विवश मन से कुछ दया न हो सके।
बेहयाई से भरे हुए किन्तु बेहया न हो सके।
हम पुरानी राह के पथिक हम नवीनता से दूर हैं,
हम लकीर के फकीर हैं हमसे कुछ नया न हो सके।।

433

न जाने क्यों सदा हँसकर हमें अपनी तरफ खींचे।
वो चुंबक की तरह कसकर हमें अपनी तरफ खींचे।
है ऐसा कुछ तो उसमें जो सदा हावी रहे हम पर,
हमारी सोच में बसकर हमें अपनी तरफ खींचे।।

434

कहाँ जायें किधर जायें करें क्या सूझता क्या है।
है क्या उद्‌देश्य जीवन का स्वयं से पूछता क्या है।
अधूरी ही रही अब तक कथा पूरी नहीं होनी,
पहेली जिंदगानी की समय से बूझता क्या है।।

435

हमारी जिंदगी निश्चित कई टुकड़ों में बँट जाती।
अचंभित दृष्टि भौतिक साधनों से दूर हट जाती।
बुढ़ापे में हमारी शक्तियाँ निष्क्रिय भले होतीं,
मगर निज आत्मा परमात्मा के हो निकट जाती।।

436

जो कुछ भी होने वाला है।
जो कुछ भी खोने वाला है।
सही आकलन करके रखना,
समय शूल बोने वाला है।।

437

मानवता का कोष हृदय में।
धारो तुम संतोष हृदय में।
परिवर्तन लाना है तुमको,
पालो युग आक्रोश हृदय में।।

438

जुल्मों के सिलसिले ढहेंगे।
सारे शिकवे गिले ढहेंगे।
अब आने वाला पल वह भी,
अन्यायी के किले ढहेंगे।।

439

हर ठोकर पछाड़ दरकेंगे।
सीने सख्त फाड़ दरकेंगे।
भूख उदर की जब चीखेगी,
जड़ से ये पहाड़ दरकेंगे।।

440

आर्त्तनाद प्राणी करता है।
आशा कल्याणी करता है।
जो भी होगा सुखमय होगा,
मन भविष्यवाणी करता है।।

441

राज वो सारे खोल डालेगा।
रिश्ता हर एक तोल डालेगा।
भ्रम न कोई वो पालेगा मन में,
जो भी चाहेगा बोल डालेगा।।

442

करके वह प्रहार गुजरेंगे।
ले बर्छी कटार गुजरेंगे।
मानवता को अपने हाथों,
करके शर्मसार गुजरेंगे।।

443

करते पाप रहे हम लोग।
ढो अभिशाप रहे हम लोग।
जलती हुई चिता सपनों की,
उसको ताप रहे हम लोग।।

444

दहकी हुई न सूर्यमुखी हो।
कहीं न कलिका कोई दुखी हो।
सामाजिक संरचना ऐसी,
सृजित करें हर कोई सुखी हो।।

445

समय सनाथ न आने वाला।
ईश्वर साथ न आने वाला।
कठिन तपस्या करनी होगी,
अंबर हाथ न आने वाला।।

446

कुछ करना कर पाना मुश्किल।
करना कोई बहाना मुश्किल।
कैसा वह इंसान कि जिसको,
जीते जी मर जाना मुश्किल।।

447

यह दिन का प्रथमांश नहीं है।
जीवन मात्र कथांश नहीं है।
पहले जो तेवर थे अपने,
उनका शेष शतांश नहीं है।।

448

इधर उधर की बात न करना।
चिंतन में अवसाद न भरना।
बीच भँवर में फँस मत जाना,
नदिया के उस पार उतरना।।

449

होनी जो संभावित होगी।
विधि अनुसार प्रभावित होगी।
साँस साँस में संतोषों की,
गंगा एक प्रवाहित होगी।।

450

सपनों की उत्पत्ति न होगी।
चाहों की संपत्ति न होगी।
सहज सरल तब जीवन होगा,
सम्मुख कोई विपत्ति न होगी।।

451

हद से भी ज्यादा सयानी हमको लगती है।
अनकही सी बेजुबानी हमको लगती है।
यह जलाती और शीतलता भी देती है,
आग पानी जिंदगानी हमको लगती है।।

452

जानते तुम भी हो हम भी किस से क्या मिलना।
चलती चक्की में बताओ पिस के क्या मिलना।
हम समंदर यदि बनें गहराई भी नापें,
बेवजह उलझो किसी से इस से क्या मिलना।।

453

औरों के हित गिरे वो पसीना भला।
जान्हवी सा सलिल पीना पीना भला।
अपने ही वास्ते हम जिये क्या जिये,
साथ अपनों के जीना है जीना भला।।

454

होनी होकर रहे होना प्रतिघात है।
जीतना है कठिन खानी ही मात है।
आपके बाद भी आप की सोच यदि,
जग में जिंदा रहे तो बड़ी बात है।।

455

मन दरिंदा न हो ऐसी कोशिश करें।
दैत्य जिंदा न हो ऐसी कोशिश करें।
नभ में उड़ते हुए तीर के सामने,
वह परिंदा न हो ऐसी कोशिश करें।।

456

जानता आदमी सत्य सब।
अपने जीवन के दुष्कृत्य सब।
सीखा उसने मयूरों से है,
करना किस भाँति के नृत्य सब।।

457

पग कुपथ पर तो धरते नहीं।
मन में दावाग्नि भरते नहीं।
कैसे दोषी तुम्हें मान लें,
तुम गलत कुछ भी करते नहीं।।

458

न्याय विधान एक हो सबका।
जीवन धर्म नेक हो सबका।
अपना तो है यही सोचना,
शिव सुंदर विवेक हो सबका।।

459

यह जीवन विधि सम्मत होगा।
चिंतन जीवित जाग्रत होगा।
हमको साफ दिखाई देता,
मंगलकारी आगत होगा।।

460

सागर खारा देखा जाता।
मन से हारा देखा जाता।
तुम औरों के सुख से जलते,
दुख न तुम्हारा देखा जाता।।

461

बुनना उत्कृष्ट ताना बाना है।
श्रेष्ठतम हम यही बताना है।
अपने व्यवहार अपने कर्मों से,
विश्व गुरु हिन्द को बनाना है।।

462

प्रभु को माथा टेक करेंगे।
कर्म सात्विक नेक करेंगे।
हम भविष्य के हित चिंतन में,
धरती अम्बर एक करेंगे।।

463

जिनके प्यासे नयन उदर भूखे।
जिनके तरसे सपन अधर सूखे।
वो विधाता को याद करते हैं,
पाँव जिनके हों दर-बदर दूखे।।

464

सुखद अनागत लायेंगे हम।
चमत्कार दिखलायेंगे हम।
जो पर्वत ऊँचे दिखते हैं,
चरणों तले दबायेंगे हम।।

465

लोग हो जायेंगे चिड़चिड़े।
बात जब बेतुकी ही छिड़े।
तुमने कोशिश कभी की नहीं,
द्वार कैसे न खुलते भिड़े।।

466

जुड़ न पाते वक़्त के टूटे सिरे लगते।
सामने जो दिख रहे सब सिरफिरे लगते।
मेरे ईश्वर तुम हमें आकर बचा लेना,
हम समय के चक्रव्यूहों में घिरे लगते।।

467

आदमी गहरे तनावों के समुंदर में।
झाँकता अपने ही भीतर अपने ही घर में।
कोई तो है जो इन्हें जीने नहीं देता,
खोजता है शांति के पल वह जगत भर में।।

468

आते जाते रहे रात दिन दुनिया में।
सोचें होती रहीं नित मलिन दुनिया में।
तूने ही तो भरी प्रीति की आँजुरी,
किसको अपना कहें तेरे बिन दुनियाँ में।।

469

रूप के आचमन में लगे रह गये।
सो न पाये जगे के जगे रह गये।
तुमसे मिलना जगत में बड़ी बात है,
तुमको देखा ठगे के ठगे रह गये।।

470

हमारी कामना का पुष्प बनकर महमहायेगा।
गगन भर में पवन उन्चास बनकर डोल जायेगा।
भविष्यत के लिये सारे निजी जो स्वार्थ हम त्यागें,
तभी स्वर्णिम अनागत मुस्कुराये खिलखिलायेगा।।

471

जिसका कोई नहीं ठिकाना है।
पेट भूखा न पास दाना है।
होंठ से वन्दे मातरम् उसके,
कैसे निकलेगा आजमाना है।।

472

आफतों से घिरे उठे न कभी।
ऐसे हैं सिरफिरे उठे न कभी।
उनसे उनकी ही चेतना रूठी,
चलते चलते गिरे उठे न कभी।।

473

भरी नदी है कैसे कोई पार करे।
जो भी करना है अपने अनुसार करे।
मगर मानसिकता लोगों की कच्ची है,
उनका भावुक मन कैसे स्वीकार करे।।

474

कहाँ किधर जाना है हमको ज्ञात नहीं।
हुई साँध्य बेला जीवन की प्रात नहीं।
जितने भी हैं मिले अभी तक काफी हैं,
सह पायेंगे और अधिक आघात नहीं।।

475

बस्ती कम है वन ज्यादा है।
प्रेम सूक्ष्म है धन ज्यादा है।
जीवन है असीम रत्नाकर,
जिसमें खारापन ज्यादा है।।

476

सतयुग में सत्कर्म सुहाते।
त्रेता द्वापर में प्रभु आते।
कलयुग में कल कल बहती है,
पापी नदिया सभी नहाते।।

477

प्रभु से सभी आस करते हैं।
इच्छा बड़ी खास करते हैं।
जो विपरीत परिस्थितियों में,
जीने का प्रयास करते हैं।।

478

अपने में खोये रहते हैं।
जाग्रत ही सोये रहते हैं।
संकल्पों के बीज अनेकों,
मानस में बोये रहते हैं।।

479

चलता रहता सृजन सदा ही।
युग का चिंतन मनन सदा ही।
साँस साँस गाती रहती है,
प्रभु के मोहक भजन सदा ही।।

480

भाग्य लक्ष्मी धनी हमारी।
अँधियारों से ठनी हमारी।
सुखद अनागत को करने हित,
चली सदा लेखनी हमारी।।

481

सुविधा का उपभोग न करते।
मौके सही प्रयोग न करते।
ईश्वर हमको अवसर देते,
हम उनका उपयोग न करते।।

482

गले डाल पापों का फंदा।
सोच और चिंतन से गंदा।
जो भी जग में बिकने वाला,
उसमें मानव सबसे मंदा।।

483

कुविचारों के बंधे दिखते।
इनके उनके कंधे दिखते।
पिता बने धृतराष्ट्र आज के,
पुत्र मोह में अंधे दिखते।।

484

भूमण्डल का एक ही रक्षक।
भू को फन पर धारे तक्षक।
यह संपूर्ण प्रकृति उनकी है,
परमात्मा बने संरक्षक।।

485

देती आई सबको झाँसे।
देखें तो रुक जायें साँसें।
बिछी हुई शतरंज समय की,
फेंक रहे हैं शकुनी पाँसे।।

486

लोग सारे मनस्वी होंगे।
योग धारे तपस्वी होंगे।
अपने भारत में देखना तुम भी,
कर्मयोगी यशस्वी होंगे।।

487

पाकर कोहनूर थिरकेंगे।
करके सपन पूर थिरकेंगे।
जाने कब वह दिन आयेगा,
जब मानस मयूर थिरकेंगे।।

488

कर्म विमुख निश्चय न हो कभी।
मानवता का क्षय न हो कभी।
मेरे ईश्वर इस धरती पर,
अन्यायी की जय न हो कभी।।

489

द्वार था बंद आखिर खुला।
लोग बैठे हुए मुँह फुला।
शृंखला टूटी जब धैर्य की,
नेत्र शंकर का तीजा खुला।।

490

सारे पाप सिरे से कटते।
किये हुए सत्कर्म न घटते।
पाप पुण्य में परिवर्तित हो,
नाम जो बाला जी का रटते।।

491

कानों में प्रभु नाम घोल दो।
मन के सारे द्वार खोल दो।
बाला जी खुश हो जायेंगे,
भक्ति सहित श्रीराम बोल दो।।

492

पर्वत सागर खेल खिलौने।
उनके आगे लगते बौने।
बड़े-बड़े ऋषि सिद्ध महात्मा,
बाला जी के करें मनौने।।

493

अधर खुलें प्रभु नाम ही बोलें।
नयन खुलें तो प्रभु बस डोलें।
बाला जी की अमर कथा को,
श्रवण सुनें तो सार्थक हो लें।।

494

प्रभु चरणों में ध्यान रमाओ।
सालासर की शान बढ़ाओ।
धरती से लेकर अंबर तक,
बाला जी का नाम गुंजाओ।।

495

फले बारूद जिन शाखों पे शाखें बच नहीं सकतीं।
जो निर्दोषों को जकड़ें वे सलाखें बच नहीं सकतीं।
गुनाहों से भरे हाथों को दस्ताने बचाते क्या,
हो जिनकी आँख में धोखा वो आँखें बच नहीं सकतीं।।

496

मनुजता जूझती दिखती जगत भर के बखेड़ों से।
कभी क्या शांति मिलनी है जहाजी जंगी बेड़ों से।
समुंदर में जो उठता ज्वार भाटा लील सब जाता,
वही लौटे तटों पर नाव जो बचती थपेड़ों से।।

497

हमारे नाम की रोटी न दूजा बेलने पाये।
समय जो हमने झेला है, न दूजा झेलने पाये।
नहीं अनुमति किसी को भी किसी के भाग्य से खेले,
हृदय की भावनाओं से न कोई खेलने पाये।।

498

जिंदगी जीने का कोई रास्ता दिखलायेगा।
यह कोरोना काल हमको कुछ सिखाकर जायेगा।
चल रहे जिस एक ढर्रे पर कई बरसों से हम,
उससे हटकर कुछ अलग हमसे नया करवायेगा।।

499

जिंदगी थक सी गई है आगे बढ़ती ही नहीं।
गुमशुदा गुमनाम चेहरों को ये पढ़ती ही नहीं।
पात्र सारे बेसहारे मुख मलिन श्री हीन है,
अब कलम कोई कथानक नव्य गढ़ती ही नहीं।।

500

बेहद कठिन यातना भोगी।
हम साधारण पुरुष वियोगी।
जिन सपनों की मृत्यु हो गई,
अब उनकी अंत्येष्टि न होगी।।

501

योद्धाओं से दीखे हम भी।
आर्तनाद कर चीखे हम भी।
यह जीवन यदि समरांगण तो,
युद्धनीति को सीखे हम भी।।

502

यह जीवन त्रय ताप मुक्त हो।
अभिशापित मन शाप मुक्त हो।
अपनी हार्दिक इच्छा है ये,
हर मानव अब पाप मुक्त हो।।

503

यह जीवन निर्बाध चलेगा।
बिना किये अपराध चलेगा।
अपने अपने लक्ष्य प्राप्ति हित,
अपने मन को साध चलेगा।।

504

पारदर्शी महीन अब्र है ये।
प्यार की है जमीन सब्र है ये।
संगमरमर जड़ा ये ताजमहल,
खूबसूरत हसीन कब्र है ये।।

505

मन से जीते मन से हारे टूट गये।
स्वप्न हमारे कितने सारे टूट गये।
किसको रक्खें याद किसे भूलें बोलो,
एक एक कर सभी सहारे छूट गये।।

506

ठहरा दूषित नीर कभी क्या बहता है।
जियो धर्म अनुसार सत्य यह कहता है।
नीचे से हम लोग देखते रहते हैं,
ऊपर वाला खेल दिखाता रहता है।।

507

इसलिये यह जिंदगी की जंग हारी।
कर न पाये यात्रा की पूर्व तैयारी।
दम्भ होने का यही मतलब सहज है,
स्वयं से ही शत्रुता अपनी हमारी।।

508

सत्य अनुभव ढेर सारा दे सकेगा।
जिंदगी का चित्र प्यारा दे सकेगा।
बेसहारों का सहारा हम बने तो,
हमको भी ईश्वर सहारा दे सकेगा।।

509

आसमानों इस धरा पर आके तो देखो।
गुनगुनाती जैसे धरती गाके तो देखो।
गर्व मत करना कभी ऊँचाइयों पर हो,
पग टिका इसको कभी तुम पाके तो देखो।।

510

इसे फल मानकर हरगिज न इसका स्वाद चखियेगा।
ये पर्वत से भी ऊँचा है सदा चिंतन में लखियेगा।
अनागत को बताशा मानकर मुँह में न रख लेना,
ये सागर से भी गहरा है हमेशा ध्यान रखियेगा।।

511

अनागत सच यही हर आदमी का मान रखता है।
अनागत आपकी हर भावना का ध्यान रखता है।
अनागत बन चुका है एक हिस्सा जिंदगानी का,
अनागत काव्य आंदोलन अलग पहचान रखता है।।

512

अनागत के लिये जो भी जरूरी है करेंगे हम।
जो खालीपन दिखा कोई तो उसको भी भरेंगे हम।
नई पीढ़ी के सारे स्वप्न हम साकार कर लेंगे,
अनागत देहरी पर पाँव जिस पल भी धरेंगे हम।।

513

जो सोते ही रहे अब तक उन्हें मन से जगा देगा।
जहाँ की वस्तुयें जो भी ठिकाने से लगा देगा।
प्रकाशित जिंदगी उनकी करेगा जो गहन तम में,
अनागत सूर्य बन करके जगत को जगमगा देगा।।

514

अभावों में जिया हो जो उचित अनुचित को पहचाने।
वो समझे प्रेम की भाषा वो हित परहित को पहचाने।
जो ईश्वर का पुजारी है जो रखता आस्था उनमें,
वो जीवन के महारण में विजित अविजित को पहचाने।।

515

एक मार्मिक श्लोक हृदय में गहरे से गूँजा जाये।
प्रतिमायें खण्डित मंदिर की वहाँ भला क्यों दूजा जाये।
बनतीं नहीं बिगड़ती जातीं भग्न प्यार की प्रतिमायें,
चाह रहे भगवान भी उनको श्रद्धा से पूजा जाये।।

516

जो सोचा ही नहीं हमने उसे ही व्यक्त कर डाला।
मुलायम जो रहा अब तक वो लहजा सख्त कर डाला।
हमारा भी तुम्हारा भी न जाने भाग्य था कैसा,
विधाता ने अभागिन सोच को कम्बख्त कर डाला।।

517

तभी यह विश्व हमको विश्वगुरु की भाँति जानेगा।
ये भारतवर्ष कितना गूढ़ है आगत बखानेगा।
भले वह चीन हो या पाक या नेपाल हो चाहे,
ये हिन्दुस्तान तीनों को चटाकर धूल मानेगा।।

518

हमें बेमौत मरने के लिये मजबूर करता है।
निकटता जिनमें उनको कोशिशें कर दूर करता है।
सभी को जानकारी है सभी साक्षी रहे इसके,
वो कोई है जो हर दर्पण को चकनाचूर करता है।।

519

बदल गई है जीवनचर्या बदल गई निष्ठायें हैं।
बदली बदली रीति पुरातन बदली परिभाषायें हैं।
कर भी क्या सकता है कोई सबकी अपनी नीतियाँ,
अवसरवादी अवसर पाकर करते दाँयें बाँयें हैं।।

520

करो प्रार्थना परहित वाला काम करो।
उनके पाँवों को पकड़ो मन भाव भरो।
वही तुम्हें भवसागर पार करा देंगे,
आयेंगे भगवान जरा संतोष धरो।।

521

मानव का सदा से ही दमन दैत्य दल करे।
जो भी बचा है शेष वो होनी प्रबल करे।
है पास अपने धैर्य की अनाम संपदा,
संतोष की पूँजी ही जिंदगी सरल करे।।

522

इंसान करे त्याग तो ये काम बड़ा है।
वह मन में भरे आग तो ये काम बड़ा है।
जन्मों से सोता ही रहा ये जागता नहीं,
सोते से जाये जाग तो ये काम बड़ा है।।

523

इंसान जो चाहे तो भाग्य को ही बदल दे।
सत्कर्म से दुष्कर्म को चुटकी में मसल दे।
उत्साह से संघर्ष करे हर बुराई का,
कीचड़ में रह के प्रेम का महका वो कमल दे।

524

अच्छे जो करें कर्म तो मनुजत्व सार्थक।
आयें जो काम देश के अमरत्व सार्थक।
हमको न ईश के सिवा किसी का आसरा,
ईश्वर करे कृपा तभी पुरुषत्व सार्थक।।

525

वह चाहता है मन तभी होता विभोर है।
लेता रहा सदा से वो निर्णय कठोर है।
कठपुतलियों की भाँति हम उसके प्रभाव में,
परमात्मा के हाथ में जीवन की डोर है।।

526

ये आसमान ये धरा है प्रभु की कृपा ही।
हमको किसी से आसरा है प्रभु की कृपा ही।
उसके सिवा न बात कोई मन की कर सके,
ईमान अपना है खरा है प्रभु की कृपा ही।।

527

मानस अगर प्रबल रहा तो पास बहुत है।
धरती न दे जो साथ तो आकाश बहुत है।
हम उसकी शक्ति से ही बड़ा काम कर सकें,
ईश्वर का हमें होता है आभास बहुत है।।

528

व्योम से मेघ जल बन बरस जायेगा।
आपके मन में भारत ही बस जायेगा।
आप चिंतन करें देश हित के लिये,
आपका हित स्वतः हो सरस जायेगा।।

529

मृत्यु की घाटियों में विचरने लगे।
राख बन कर प्रकृति में बिखरने लगे।
एक दिन यह भी संभव तुम्हें चाहते,
चाहते चाहते चाह मरने लगे।।

530

जो कुछ भी है पास हमारे एक दिवस खोना ही है।
सुख संतोष धैर्य के फल के बीज हमें बोना ही है।
हमको उनकी कृपा चाहिये और न कोई चाह बची,
जब बाला जी मार्ग दिखायें सफल हमें होना ही है।।

531

तुम्हारे शीश पर आकर वरद कर अपने धर देंगे।
तुम्हारी जिंदगानी में अलौकिक ज्योति भर देंगे।
हो जब अत्यंत व्याकुल मन करो तब ध्यान तुम प्रभु का,
वो अंतर्यामी बालाजी हृदय को शांत कर देंगे।।

532

हमें प्राणों से भी प्यारे हमारे बाला जी न्यारे।
सदा आशीष देते हैं शिखर को आँजुरी धारे।
जगत के वे नियंता हैं सृष्टि को दृष्टि में रखते,
करें आराधना उनकी वो सिय की आँख के तारे।।

533

शिला पूजन हुआ लगती अयोध्या आत्मा का धाम।
राम के ध्यान में ही डूबना दुनिया को आठों याम।
राम का नाम हम सबको नई अनुभूतियाँ देगा,
कहो श्रीराम जय जय राम जय जय राम सीताराम।।

534

राम ही राम रटते जाइये कल्याण होगा ही।
राम के साथ में उनका धनुष और बाण होगा ही।
वो मर्यादा के सागर हैं वो पुरुषोत्तम गुणागर हैं,
नहीं श्रीराम में लगता वो मन पाषाण होगा ही।।

535

पग तले बीते कल वाली कंक्रीट है।
हम सभी पर पड़ी व्यंग्य की छींट है।
जो कठिन काल में सोच विकसित हुई,
वह अनागत के आधार की ईंट है।।

536

थे युवा प्रौढ़ फिर वृद्ध भी हो गये।
भावनाओं से समृद्ध भी हो गये।
जब अनागत को सहयोग सबका मिला,
मानियेगा कि स्तब्ध भी हो गये।।

537

हम पवन पीकर गगन को खींच लाना चाहते।
अपने दोनों बाजुओं में भींच लाना चाहते।
आप भी देखें वो धरती पर दिखे कैसा,
बस तभी तो आप सबके बीच लाना चाहते।।

538

कामनाओं के कलश रीते हुए।
याद आते दिन सभी बीते हुए।
कल्पना स्वर्णिम भविष्यत की करें,
हम कठिनतम आज को जीते हुए।।

539

एक मुट्ठी भर उजाला जाग जायेगा।
कालिमाओं का गिराता झाग जायेगा।
देहरी पर साँझ को दीपक जला देना,
फिर गहन तम मुँह चुराकर भाग जायेगा।।

540

आने वाले कल को पलकों पर बिठाते हैं।
हम भविष्यत को सदा सीने लगाते हैं।
अपनी अंतिम साँस तक इसको समर्पित है,
हम अनागत काव्य आंदोलन चलाते हैं।।

541

पुण्य का ले नाम पापाचार क्यों उगलें।
अग्नि पीकर हम सदा अंगार क्यों उगलें।
मन की भद्दी भावना को वस्त्र पहनाकर,
हम उन्हें जाकर किसी के द्वार क्यों उगलें।।

542

अनागत मुस्कुराता है हमारी कल्पनाओं में।
ये खुलकर साँस लेता है खुली शीतल हवाओं में।
अजंता में एलोरा में या खजुराहो में भी देखो,
यही तो गीत गाता है गुफाओं कंदराओं में।।

543

जो बातों संस्कारों में सहज हो सात्विक होगा।
जो भाता मन को हो अपने वही तो आत्मिक होगा।
नया हो रूप जिसका रंग जिसका खुशबुयें जिसकी,
वही तो पुष्प मधुवन में अलौकिक वास्तविक होगा।।

544

एक मृगतृष्णा सरीखी प्यास भर मन गा रहा।
खूबसूरत सृष्टि का हर कण हमें बहला रहा।
शर बिंधे हिरणों सरीखे घूमते जग जंगलों में,
वक़्त बन करके शिकारी पीठ पीछे आ रहा।।

545

बड़े सम्मान से आकर वो पहले भेंट करते हैं।
दिखा अपनत्व अवसर पा के मटियामेट करते हैं।
है उनकी मानसिकता जंगली वो कर भी क्या सकते,
भरोसे के झरोखों से वही आखेट करते हैं।।

546

चाह अपनी हिम सरीखी तो पिघलना लाजिमी।
अग्नि को धधकाओ तो लपटें निकलना लाजिमी।
यदि बिना सोचे हुए हम कुछ करें तो वो गलत,
गलतियाँ यदि हम करें तो फल का फलना लाजिमी।।

547

लादकर काँधे से तरकश ला भी पाया क्या?
मेघ बन धरती पे बरबस छा भी पाया क्या?
ये हमारी या तुम्हारी वास्तविकता है,
जो गया दुनिया से वापस आ भी पाया क्या?

548

आत्मा की शक्ति से हर युद्ध जय करिये।
हो सके तो जिंदगी को गीत मय करिये।
हादसा कोई भयानक घट भी सकता है,
आसमानों की उड़ानें यूँ न तय करिये।।

549

हमारी भावनाओं पर किसी का भी नियंत्रण हो।
नहीं स्वीकार है हमको भले इसके लिये रण हो।
हमारा मन जो कहता है सदा निर्णय वही लेते,
भले इस लोक या उस लोक का कोई भी प्रकरण हो।।

550

साँसों में प्राणों में प्रभु के नाम की ज्यों बिजली।
हम सबके मानस में हैं पावन इच्छा मचली।
बाला जी तो रक्षक हैं सबकी रक्षा करते,
वे ही हैं संकटमोचक वे ही बजरंगबली।।

551

जब अपने पर आते तुम्हीं रौद्र रूप धारो।
जो परम विरोधी हैं उन्हें चुन-चुन कर मारो।
बाला जी कृपा करो संकट के पल आये,
तुम्हीं खेवनहारे हो तुम्हीं शत्रु को संघारो।।

552

हैं शरणागत प्रभु के उपकार करो स्वामी।
इस पार नदी के हम उस पार करो स्वामी।
हो ज्ञान की मूर्ति तुम्हीं देते स्फूर्ति तुम्हीं,
बाला जी भक्तों का उद्धार करो स्वामी।।

553

बाला जी चाहें तो हर संकट टल जाये।
उनकी इच्छा हो फल बेमौसम फल जाये।
कर दें जो भृकुटि टेढ़ी भयभीत पहाड़ ढहें,
संकेतों पर उनके जल दानव दल जाये।।

554

आप जो चाहे कहें वश में न संयम है।
राम के जयघोष का लहराता परचम है।
राम और रावण में यदि कुछ फर्क तो इतना,
राम युग की चेतना रावण महा तम है।।

555

शर्म से गड़ गईं आँखें।
जो तुम पर पड़ गईं आँखें।
तुम्हारे कारनामों पर,
जिद्द पर अड़ गईं आँखें।।

556

जोश भरे मन रहे झूमते।
हर बाधा को रहे चूमते।
पर्वत जैसा बोझा लादे,
बस्ती बस्ती रहे घूमते।।

557

भक्ति भावना प्रबल बसी है।
निष्ठा प्रभु की सरल बसी है।
बाला जी के वक्षस्थल में,
सियाराम छवि युगल बसी है।।

558

कर्म सभी श्रमसाध्य हमारे।
बाला जी आराध्य हमारे।
मन वाणी भी वचन धर्म भी,
प्रभु के सम्मुख बाध्य हमारे।।

559

लौह छुयें तो कर सोना दें।
खुशियों से भर हर कोना दें।
बाला जी की बात निराली,
आशीषें भर भर दोना दें।।

560

अलग रहा अंदाज है उनका।
आगत विगत आज है उनका।
बाला जी सालासर स्वामी,
तीनों लोकों राज है उनका।।

561

दीनबन्धु ऐसा न कोई है।
जैसे प्रभु वैसा न कोई है।
वह सबकी सुधि लेते रहते,
बाला जी जैसा न कोई है।।

562

प्रभु चरणों का वंदन कर लें।
उनके द्वारे अर्चन कर लें।
कहीं नहीं लगता मन अपना,
बाला जी के दर्शन कर लें।।

563

दूर करें हर दुख बाला जी।
भेंट करें हर सुख बाला जी।
अपना जीवन धन्य धन्य हो,
दिखला दें यदि मुख बाला जी।।

564

सालासर में चरण धरें हम।
प्रभु की छवि को नयन भरें हम।
बाला जी बाला जी रट कर,
हर मुश्किल आसान करें हम।।

565

दर्शन पायें जी भर कर हम।
पा जायें मुट्ठी भर वर हम।
बाला जी यदि बुलवा लें तो,
दौड़े जायें सालासर हम।।

566

बाला जी के कर हों सिर पर।
फिर न कोई हो संकट या डर।
मूँछ और दाढ़ी में उनकी,
शोभा है अद्वितीय मनोहर।।

567

कुण्डल और कवच था जिसके वक्ष में जड़ा।
किन्तु जो रहा अनीति मार्ग पर खड़ा।
सूर्य पुत्र कर्ण को नमन करें सदा,
दानियों में वो ही महादानी था बड़ा।।

568

ये कविता मात्र हमको सत्य का पथ ही दिखाती है।
ये कविता मात्र हमको जिंदगी जीना सिखाती है।
ये करती दूध का बस दूध पानी को सदा पानी,
ये कविता मात्र हमसे वास्तविकता ही लिखाती है।।

569

नित्य आती रात्रि प्रातः सांध्य बेला शान से।
चल रहा अविराम ये दुनिया का मेला शान से।
भर लगन मन आत्मा में चाह जलने के लिये,
आँधियों में जल रहा दीपक अकेला शान से।।

570

कभी अधिकार से हम ऐंठ पायेंगे नहीं लगता।
तुम्हारे मन के भीतर पैठ पायेंगे नहीं लगता।
नहीं लगता हमें अब जिंदगी किस ओर जायेगी,
कहीं भी चैन से हम बैठ पायेंगे नहीं लगता।।

571

हमारा मन हुआ पाषाण तुम ही एक दिन लोगे।
हमारे ही लिये विष वाण तुम ही एक दिन लोगे।
हमारे सामने यदि पड़ भी जाओ फेर मुँह लेंगे,
ये निश्चित है हमारे प्राण तुम ही एक दिन लोगे।।

572

सूर्य से पायेंगी आज वर शर्तियाँ।
फिर वो ढोयेंगी वरदान की अर्थियाँ।
पूरा जीवन जियेंगी वो दुख सिंधु में,
आज भी भटकी फिरतीं दिखें कुंतियाँ।।

573

जी रहीं अपने हिस्से की ये पारियाँ।
सोचों की उभरी मुख पे दिखीं धारियाँ।
आज भी बाँध कर पट्टियाँ आँख में,
त्रासदी ओढ़े मिल जातीं गांधारियाँ।।

574

हमको जो भी प्राप्त हुआ है वह इस क्षणभंगुर जीवन में।
इस धरती से इस अंबर से पर्वत शिखर और मधुवन में।
जैसे कार्तिकेय ने की थी तीनों लोकों की परिक्रमा,
हम भी करते रहते यात्रा मन में वचन और चिंतन में।।

575

धरा पर व्योम से जब भी अलौकिक वृष्टि होती है।
घुमड़ते बादलों पर मानवों की दृष्टि होती है।
वो बस जाते हृदय में आत्मा में इन्द्रधनु बनके,
चमत्कृत दृष्टि होती है परिष्कृत सृष्टि होती है।।

576

एक पैंडिल पर दायाँ पग दूजे पैंडिल पर बायाँ पग।
रिक्शा चला रहा मेहनत से नहीं भूलता वह अपना मग।
पहुँचाता हमको वो हमारे गंतव्यों की सीमा तक,
फिर भी जोखिम भरी जिंदगी उसकी जाने ये सारा जग।।

577

हाट में बिक जायेगी वह मीन लगता है।
सोच से बेहद मलिन मन दीन लगता है।
स्वाभिमानी यदि नहीं वह लेखनी तोड़े,
याचना करता हुआ कवि दीन लगता है।।

578

चाह कर वे अपनी मर्जी मर भी क्या सकते?
प्रार्थनायें करके बोलो तर भी क्या सकते?
बस उन्हें सद्गति दिला सकता विधाता ही,
परकटे घायल परिन्दे कर भी क्या सकते?

579

अपने को तैयार रखिये हर समीक्षा के लिये।
राह को तकिये अनागत की प्रतीक्षा के लिये।
शब्दवेधी वाण लोगों के तने हम देखते,
ढाल अपने सामने रखिये परीक्षा के लिये।।

580

जान कर खतरा न कोई भी स्वजन पर लीजिये।
सत्य निष्ठा को हमेशा ही सृजन पर लीजिये।
आत्मा मजबूत रखिये तोड़िये मत आस्था,
कोशिशें कितनी करे कोई न मन पर लीजिये।।

581

वह न प्रस्तर दीन हीनों की कुटी पर एक फेंके।
वह न औरों की चिता पर स्वार्थ की रोटी ही सेंके।
वह सहज बनकर सरलतम जिंदगी जीता सदा,
स्वाभिमानी कवि न ऊँची देहरी पर शीश टेके।।

582

आज हो जैसे दिखोगे कल न वैसे तुम।
लिख सकोगे युग ऋचायें फिर न कैसे तुम।
स्वयं को बदलो प्रकृति जैसे बदलती है,
बन सकोगे आत्मा के गीत जैसे तुम।।

583

मेघ बन करके बरसने का तरीका खोजिये।
सृष्टि की ही भाँति हँसने का तरीका खोजिये।
क्यों भला एकांत में कर जिंदगी को होम दें,
दोस्तों के मन में बसने का तरीका खोजिये।।

584

मन में जो हो खुल के कहने की भी आदत डालिये।
अनुभवों के घर में रहने की भी आदत डालिये।
हर घड़ी सहना हमें है काल की कटु त्रासदी,
इस धरा की भाँति सहने की भी आदत डालिये।।

585

दूर मन के सब भरम करने की कोशिश कीजिये।
प्रस्तरों की आँख नम करने की कोशिश कीजिये।
इससे अच्छा कुछ नहीं हम दें सहारा दीन को,
आदमी की पीर कम करने की कोशिश कीजिये।।

586

खिलखिला कर हँस पड़ेंगे फूल सारे शाख के।
व्यर्थ वैभव व्यर्थ भौतिकता को माने लाख के।
हम हैं मानव मानवों की चाहते पूरी करें,
पोंछिये रोते हुए मानव के आँसू आँख के।।

587

हमारे वास्ते फेंके समय वो जाल कैसा हो।
हमें अनुमान भी क्या है अनागत काल कैसा हो।
हमारी आने वाली पीढ़ियाँ हमसे ही पूछेंगी,
हमें खुद ही नहीं मालूम अपना हाल कैसा हो।।

588

हम उजालों का करें स्वागत सभी अधिकार से।
त्याग दें उस व्योम को हम जुड़ सकें आधार से।
दीनता को ढो रहे अभिशाप की ही भाँति हम,
फेंक दें यह बोझ कंधे मुक्त कर दे भार से।।

589

प्रार्थना प्रभु से करें हम मेघ जल देते रहें।
जो छुयें मन आत्मा को ऐसे पल देते रहें।
कर्म हम करते रहेंगे व्यक्ति के कल्याण के,
वे हमें पुरुषार्थ से पोषित जो फल देते रहें।।

590

हर सिलन टूटी हृदय की सी लिये समझो।
एक अमृत घट समूचा पी लिये समझो।
एक पल तुमने नयन भर हमको जो देखा,
एक पूरी जिंदगी हम जी लिये समझो।।

591

एक शायर से रुबाई रूठ जाती है।
एक रोगी से दवाई रूठ जाती है।
जब हमारी सोच हल्की से भी हल्की हो,
तब कलम से रोशनाई रूठ जाती है।।

592

मार्ग हर अपनी तरफ ही मोड़ लेते हैं।
जो भी टूटी जिंदगी को जोड़ लेते हैं।
तब परम पुरुषार्थ उनका जाग्रत होता,
चक्रवातों से जो बढ़कर होड़ लेते हैं।।

593

सर्जनाओं से भरा मौसम तुम्हें सौंपा।
पूरे जीवन का कमाया श्रम तुम्हें सौंपा।
उसको तुमने अपनी मानी मिल्कियत लेकिन,
हमने ये सोचा बहुत ही कम तुम्हें सौंपा।।

594

सत्य को स्वीकारती हर आँख नम कर दें।
कर सकें तो कद हमारा और कम कर दें।
रच रहे हैं हम अनागत की नई पीढ़ी,
आप चाहें तो हमारा सिर कलम कर दें।।

595

मन को तोल न पाता कोई।
सच्चा बोल न पाता कोई।
जो रहस्य सागर से गहरे,
उनको खोल न पाता कोई।।

596

अधर अधर छू रहा गरल है।
दूषित हर मानस का जल है।
जग का भार उठाने वाले,
जीवन जीना कहाँ सरल है।।

597

जीवन कोई खेल नहीं है।
धूप छाँह का मेल नहीं है।
जहाँ प्रीति में मानव जीता,
चलती वहाँ गुलेल नहीं है।।

598

पृष्ठ मनुहार के जो रचे उड़ गये।
दृश्य नयनों को जो भी जँचे उड़ गये।
इस तरह से चलीं आँधियाँ द्वेष की,
नेह के प्रीति के परखचे उड़ गये।।

599

कोई हँसता कोई रोता मिला यहाँ।
कोई जगता कोई सोता मिला यहाँ।
जीवन जैसे मुद्रा का ही खेल हुआ,
कोई पाता कोई खोता मिला यहाँ।।

600

व्यर्थ की जद्दोजहद में आदमी।
रह न पाता अपनी हद में आदमी।
कद भले ऊँचा दिया ईश्वर ने हो,
हो गया छोटा है कद में आदमी।।

601

गिन रहे दिन जिंदगी के स्वयं से ऊबे हुए।
लग रहा है ध्वस्त उनके सारे मंसूबे हुए।
अब करें वह क्या यही उलझन बड़ी है सामने,
स्वप्न सारे कालिमा की झील में डूबे हुए।।

602

शांति बहुत कम क्रोध बहुत है।
होना इस पर शोध बहुत है।
क्षमा इसे कर देना ईश्वर,
मानव अभी अबोध बहुत है।।

603

निश्चित सीमा तक कर सकता।
कोशिश वह भरसक कर सकता।
मानव ही मानव का जीवन,
चाहे तो सार्थक कर सकता।।

604

देखो कोई अनर्थ न करना।
सबल हृदय असमर्थ न करना।
समुचित सदुपयोग कर लेना,
इस जीवन को व्यर्थ न करना।।

605

पढ़ो वेदों पुराणों की ऋचाओं में अनागत है।
गगन में बह रही अविरल हवाओं में अनागत है।
अनागत के बिना हम शून्य जीते शून्यता में ही,
हमारी कामनाओं चेतनाओं में अनागत है।।

606

दुआ ताबीज शुभ आशीष या भस्में नहीं रखते।
खुली आँखों से घूमें उनपे वो चश्मे नहीं रखते।
नियंत्रण ही नहीं मस्तिष्क पर मन पर रहा उनके,
हजारों लोग अपनी सोच को वश में नहीं रखते।।

607

हमने आशा की परिभाषा लिखी किया मानस उत्कर्ष।
हमने बहा दी सुख की गंगा मुखड़ों पर लिख डाला हर्ष।
हमने खींची बड़ी लकीरें छोटी लकीरों के आगे,
अमर हमारी गौरव गाथा अमर हमारा भारतवर्ष।।

608

अच्छे कर्म किये हैं हमने सहे बहुत आघात सही है।
सुबह दोपहर शाम सही है सपनों वाली रात सही है।
हम सा बड़भागी न कोई भी अपना जीवन पुण्य भरा है,
हम न देवता रहे गुनाहों के यह बिल्कुल बात सही है।।

609

कष्ट भोगते हुए कठिन हम प्रसून साथ आपके।
है अनागतीय सच यही अपने हाथ हाथ आपके।
जिनके हस्त शीश पर सदा वे कृपानिधान राम जी,
वे ही नाथ हम सभी के हैं और वे ही नाथ आपके।।

610

भू पर नभ पर पवन सलिल में भटक रहे हैं फुटपाथों में।
बनकर एक अनाथ रह गये हुए सनाथ नहीं नाथों में।
कहीं न कोई यज्ञ स्वयंवर कहीं न आँख दिखे मछली की,
हम अर्जुन की भाँति खड़े हैं धनुष बाण लेकर हाथों में।।

611

दबी हुई कुचली मानवता को मानस की प्रीति बाँटने।
हमको मिलकर चलना होगा शूलों वाली शाख छाँटने।
सौ अभद्र शब्दों की सीमा तक ही क्षमादान मिल सकता,
उसके बाद निकल पड़ता है चक्र सुदर्शन शीश काटने।।

612

विचरण करते रहे मुक्त हो भले राजपथ या समरांगण।
पुष्प पड़े हों पग के नीचे या तलवों में उभरे हो व्रण।
चोटें खाईं सदा पीठ पर सीने पर न घाव है कोई,
हमने अब तक हार न मानी भले न जीता हो कोई रण।।

613

रात रात भर चली लेखनी रात रात भर नींद न आई।
दिवस दिवस भर चलते बीता शाम शाम होते गहराई।
अँगनाई में बीते कल की चीखें सुनकर खीझ उठा मन,
इसीलिये अब सुननी होगी हमें अनागत की शहनाई।।

614

न तुमको शांति मिलनी है न मिलना धैर्य का आसन।
तुम्हारे भाल पर यश का लगाया ईश ने चंदन।
तुम्हारे आत्म मंदिर में अहम की मूर्ति अभिशापित,
जो बनते शाख फल वाली तो करते हम भी अभिनंदन।।

615

धारा के विरुद्ध बहते हम।
होकर बड़े क्रुद्ध बहते हम।
ठहर ठहर कर लहर लहर से,
करते हुए युद्ध बहते हम।।

616

अपना कर आखेट गया वो।
युग को पौरुष भेंट गया वो।
भीष्म प्रतिज्ञा जिसने ठानी,
शरशैया पर लेट गया वो।।

617

तार न वीणा के झंकारे।
कविता की दुर्दशा निहारे।
आर्त्तनाद कर सरस्वती माँ,
मानस पुत्रों को धिक्कारे।।

618

गहरी एक आह भरती है।
सौ सौ मौत रोज मरती है।
जब कवि उसे चुटकुला समझे,
कविता आत्मदाह करती है।।

619

कुरुवंशी समाज के जैसा।
रोते हुए आज के जैसा।
अब तो जीवन लगता हमको,
राजा बिना राज के जैसा।।

620

तब बुजुर्गों का जमाना याद आता है।
तब सभी अपनों का जाना याद आता है।
जब नई जगहों पे असहज हम कभी होते,
तब पुराना आशियाना याद आता है।।

❁ ❁ ❁

रचनाकार परिचय

डॉ. अजय प्रसून

जन्म : 18 जनवरी, 1954, लखनऊ

माता-पिता : श्री सरोजकुमार द्विवेदी एवं श्रीमती कांती द्विवेदी

शिक्षा : एम.ए.(हिंदी), बी.एम.एस.(होम्योपैथ चिकित्सक)

संप्रतिः शासकीय सेवा से निवृत्त होकर साहित्यसेवा एवं चिकित्सकीय सेवा में संलग्न।

पताः माँ वैभवलक्ष्मी होम्योपैथिक क्लीनिक, 538/द्वितीय/318, योगीनगर, त्रिवेणी नगर III, सीतापुर रोड, लखनऊ-226020(उ.प्र.) मो.: 9305107455

प्रकाशित कृतियाँ : युग के आँसू, गाओ गीत सुनाओ गीत (उ.प्र. शासन द्वारा पुरस्कृत), बच्चों शिष्टाचार न भूलो, महानगर के बीच, बच्चों की प्यारी कविताएँ, बाँसुरी की भीतरी तह में, दर्पण शिलालेख हो जाए, आँसुओं का बयान जारी है, श्री हनुमान अस्सीसा, श्री शनि अस्सीसा, कालजयी हम प्यास लिये, सहित विभिन्न कृतियाँ। सद्यः प्रकाशित कृति- प्रश्न अनशन किये जो बैठे हैं (अनागत मुक्तक संग्रह)।

संपादन : शब्द नए गढ़ने हैं, अनागत के कमल हैं हम, शब्द की शक्ति को बचाना है, सहित हिंदी की प्रमुख काव्य-केंद्रित त्रैमासिक 'ताम्रपर्णी' का संपादन। हिंदी की शोध-संदर्भ पत्रिका के अनागत कविता आंदोलन पर केंद्रित विशेष-अंक के अतिथि संपादक।

प्रसारण : आकाशवाणी और दूरदर्शन केंद्रों से नियमित प्रसारण, आकाशवाणी के अनुबंधित रचनाकार। इसके साथ ही सारेगामा प्रा.लि. ने आपके गीतों पर एक अलबम तैयार किया है, इसमें जगजीत सिंह के साथ आपके भी गीत हैं, जिसे देश के जाने-माने गायकों ने स्वर दिए हैं।

सम्मान/पुरस्कार : उ.प्र. सरकार के विभिन्न पुरस्कारों के साथ ही सैकड़ों सम्मान एवं पुरस्कारों से सम्मानित। इनमें शिवभार गुर्जर लखनवी संस्था द्वारा प्रदत्त 'आचार्य पिंगल साहित्यश्री सम्मान', 'पं. दुर्गाप्रसाद मित्र साहित्यसेवी सम्मान-2020', साहित्यिक संस्था काव्यप्रवाह का 'काव्य गौरव सम्मान', युवा रचनाकार मंच लखनऊ द्वारा 'डॉ. अनंत माधव चिपलूणकर स्मृति सम्मान-2019', भारतीय अटल सेना (राष्ट्रवादी) द्वारा प्रदत्त 'भारतीय अटल लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड-2020 प्रमुख हैं।

डॉ. अजय प्रसून के व्यापक विस्तृत रचना संसार का परिचय उपरिवर्णित बिंदुओं से कहीं अधिक व्यापक है। बाल कविताओं के साथ ही कविता की विभिन्न विधाओं, यथा- हिंदी गजल, गीत, नवगीत, मुक्तछंद, मुक्तक, अवधी, लोकगीत आदि में आपने रचनायें की हैं। देश के विभिन्न प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में डॉ. अजय का रचना-संसार शोध, समीक्षा, चर्चा, परिचर्चा में है। 'कठिन वर्तमान को जीते हुए स्वर्णिम भविष्य की कामना' के ध्येय-वाक्य को केंद्र में रखकर सत्तर के दशक में डॉ. अजय प्रसून ने अनागत कविता आंदोलन का प्रवर्तन किया था। यह ध्येय-वाक्य सनातन भारतीय दर्शन और परंपरा पर आधारित होने के साथ ही सकारात्मकता के साथ जीवन-संघर्षों में संलग्न होने की प्रेरणा देने वाला है। यही ऊर्जा अनागत कविता आंदोलन की अनवरत प्रवाहित धारा का मूल है। एक अनौपचारिक गुरुकुल के रूप में डॉ. अजय ने अनेक कवियों, साहित्यसेवियों को रचनाकर्म में संलग्न किया है। इसी के फलस्वरूप अनागत कविता आंदोलन का विस्तार आज के कवियों-कवयित्रियों की रचनाओं में देखा जा सकता है। उनके रचना-संसार पर शोधकार्य प्रारंभ हुए हैं। डॉ. अजय प्रसून अखिल भारतीय अनागत साहित्य संस्थान के संस्थापक हैं। उनके द्वारा अनागत मार्त्तण्ड सम्मान और अनागत चंद्रिका सम्मान देने की अनूठी परंपरा प्रारंभ की गई है। कवयित्रियों के लिए अनागत चंद्रिका सम्मान साहित्य जगत में एकदम अनूठा प्रयोग है।

डॉ. अजय का सरल, सहज, मिलनसार व्यक्तित्व, कोमल-मृदुल स्वभाव और साहित्यसेवा के लिए अनवरत संलग्नता माँ वागीश्वरी के वरदान से ही सुलभ है।

प्रस्तुतिः **डॉ. राहुल मिश्र,** प्राध्यापक, हिंदी,
केंद्रीय बौद्ध शिक्षा संस्थान (मानद विश्वविद्यालय), लेह (लद्दाख)

SAWI

सावी पब्लिकेशन

एलजीएफ-6, बंशीधर काम्पलेक्स, डालीगंज
लखनऊ-226020 (उ.प्र.) मो.: 9335221278
e-mail : sawipublication@gmail.com

₹ 175.00

9 788194 950592